अहले सुन्नत व जमात
शैतान
से
सावधान
गुनाहों से बचाने वाली किताब
मिनजानिब:
रज़वी टीम, इण्डिया
मुसन्निफ
अनवर रज़ा खान अज़हरी

हम्द व सना

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

या अल्लाह, तेरी जात बेमिस्ल व यकता है, तू हमेशा से है, हमेशा रहेगा। तू एक है, पाक है, तू ही इबादत के लायक है। तू ही सारी चीजों को बनाने वाला है। तू ही सारे जहां का रब है। या अल्लाह तू मेरा खुदा, मैं तेरा बंदा, तूने मुझे इबादत के लिए बनाया और कुरआन मेरे हिदायत के लिए उतारा, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तरीका ए सुन्नत के लिए भेजा, वलियों का सिलसिला निसबत और मोहब्बत के लिए कयामत तक जारी रखा ताकि मैं कुरआन से हिदायत पाऊँ, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सुन्नतको अपनाऊं और वलियों से निसबत और मोहब्बत करने वाला बन जाऊं, ऐ मेरे रब तेरा एहसाने अज़ीम है की आदम अलैहिस्लाम को अपने कुदरत वाले हाथ से बनाया और उनकी औलाद हमे बनाया और सबसे बड़ा एहसान ये है कि जिस हबीब को तूने अपने नूर की तजल्ली से बनाया उसका उम्मती हमे बनाया यानी अशरफुल मखलुकात बनाया और शुक्र है तेरी सारी नेमतों का जिसे मैं शुमार नही कर सकता। या अल्लाह तुझ से अज़ीम कोई नहीं।

दरुद व सलाम हो उस नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिसे तूने अपनी नूर की तजल्ली से बनाया और सारे जहां के लिए रहमत बनाकर हम गुनाहगार उम्मतियों का नबी बनाया दरुद व सलाम हो उस नबी के आल पर जिस का सिलसिला तूने कयामत तक जारी रखा, और सलामती हो उन तमाम मोमिनो मोमिनात पर जिन्होंने तुझे राज़ी किया।

फेहरिस्त

किताब लिखने की वजह

आज का दौर शार्ट–कर्ट का दौर है और शार्ट–कर्ट शैतानी तरीका है और शैतान इंसान का दुश्मन है। हर जगह शैतान की हुकूमत है अपने आप को मुसलमान कहने वाले मुनाफ़िक़, फ़ासिक व फ़ाजिर लोग शरीयत की धज्जियां उड़ा रहे है। अल्लाह ने शैतान की मुखालफत का हुक़्म दिया है और फ़रमाया (तर्जमा) :बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे दुश्मन समझो (सूरह फ़ातिर, आयत न. 6) लेकिन अफ़सोस आज मुसलमान शैतान की हिमायत में लगे हुए है। शैतान ऐसा दुश्मन है जिसे हम ज़ाहिरी आंखों से देख नही सकते लेकिन वो हमें देख सकता है। ऐसे दुश्मन से बचना कितना मुश्किल है जिसे हम देख नही सकते । शैतान को दिल की निगाहों यानी बातिनी इल्म से देखकर उससे बचा जा सकता है लेकिन किसी के पास इतना वक़्त नही की कुरआन और हदीस को पढ़ कर और समझ कर कोई काम करे या कोई फैसला ले। आज मुसलमान इस क़दर दुनिया से चिपका हुवा है जैसे दूध पीता बच्चा अपने मां के छाती से चिपका होता है बल्कि इससे भी ज़्यादा,जबकि हदीस में आया है कि ये दुनिया मुसलमान के लिए क़ैद ख़ाना है और काफ़िर के लिए जन्नत यानी राहत की ज़िदगी। आज का मुसलमान न हक़ को जानता है ना हक़ीक़त को मानता है। शैतान अभी जिन्दा है वो क़यामत तक का मोहलत पा चुका है। पिछली जितनी क़ौमें गुज़री सबको शैतान हलाक़ कर चुका है कहीं किसी का नामो निशान नही ये सब शैतान का ही फितना फ़साद है । फितनों के इस दौर में आलिम ग़लत हो सकता है, पीर गलत हो सकता है, वो इसलिए कि अहादीस में बुरे उलमा का भी ज़िक्र है और शैतान दौलत, शोहरत और औरत का लालच दे कर नेक को भी बुरा बना देने का काम करता रहता है जो आज हम देख रहे है कोई दौलत पसंद करता है तो कोई शोहरत पसंद करता है तो कोई औरत पसंद करके हलाक़ होता है, मगर बाहर से उनकी हलाकत पता नही चलती क्योंकि इसे ज़ाहिर की आंखों से देखा नही जा सकता अगर आप हक़ीक़त का जानना चाहते हैं तो बातिनी इल्म हासिल कीजिये जो दुनियादारी से दूरी बना कर हासिल किया जा सकता है।

आपका खा़दिम , अनवर रज़ा खान अज़हरी

शैतान क्यों पैदा किया गया

खुदा तआला हकीमे मुतलक है और हकीम का कोई काम हिकमत से खाली नहीं होता। खुदा तआला ने जो कुछ भी पैदा फरमाया है मबनी बर हिकमत है किसी चीज़ को भी देखीये तो यूं कहिये ।

ऐ रब हमारे तूने उसे बेकार नहीं बनाया हजरत इमाम ग़ज़ाली अलैहिर्रहमह ने कीमियाए-सआदत में लिखा है कि एक मर्तबा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने छत पर छिपकली को देखा और खुदा से पूछा या इलाही तूने छिपकली को क्यों बनाया खुदा तआला ने फरमायाः मूसा ! तुम से पहले यह छिपकली मुझ से यही पुछ रही थी कि इलाही तूने मूसा को क्यों बनाया मेरे कलीम ! मैंने जो कुछ बनाया है मब्नी बर हिकमत ही पैदा फरमाया है! यह हकीकत है कि हर चीज़ अपनी ज़िद से पहचानी जाती है यअनी मिठास जभी मअलूम हो सकती है जब कड़वाहट भी हो सेहत की क़द्र उसी वक़्त मअलूम हो सकती है। जब कि बीमारी भी हो, खुश्बू का इल्म उसी वक़्त हो सकता है जब कि बदबू भी हो, एक पहलवान अपनी हिम्मत व ताकत का मुज़ाहिरा उसी वक़्त कर सकता है जबकि उस के मकाबिल में कोई दूसरा पहलवान भी हो, पहलवान किसी दूसरे पहलवान को गिराकर ही पहलवान कहलाता है अगर मकाबिल में कोई पहलवान ही न हो तो वह गिरायेगा किसे? और अगर गिरायेगा किसी को नहीं तो पहलवान कहलायेगा कैसे? इस लिये ज़रूरी है कि पहलवान से टक्कर लेने वाला भी कोई हो, टकराने वाले की वजह से पहलवान के कमालात का इज़हार हो सकेगा। (शैतान की हिकायत)

शैतान से पनाह:

शैतान इंसान का अज़ली (शुरु से) और पैदाईसी दुश्मन है और उस वक्त तक दुश्मनी करता रहेगा जब तक यह दुनिया क़ाइम है क्योंकि उसे अल्लाह के तरफ से मोहलत मिल चुकी है और वो ऐसा दुश्मन है कि जिस से कोई बच नहीं सकती है क्योंकि उसकी मंशा इंसान को हलाकत में डालना है वह हर वक्त अपनी शैतानियत के ज़ोर पर इंसान से ऐसे काम करवाना चाहता है जो अल्लाह की नाफरमानी पर मब्नी हों और उस नाफरमानी के नतीजे में इंसान भी अल्लाह की रहमत से ऐसे ही लईन और मरदूद हो जाये जिस तरह वह खुद है और इस तरह से उसे अदावत का इन्तिकाम मिल सकेगा। फिर शैतान हर इंसान की मुखालिफत करता है ख़्वाह उसके साथी ही क्यों न हो मगर उन लोगो की तो बहुत ज्यादा मुखालिफत करता है जो अल्लाह के खास बन्दे होते हैं। मुखालिफत करने में वह सिर्फ अकेला ही नहीं है बल्कि उसके साथ एक शयातीन का गिरोह है जिस में इंसानी नफ्स की कमज़ोरी और ख्वाहिशात भी शामिल हैं।

अब सवाल पैदा होता है कि शैतान जब इंसान का ऐसा दुश्मन है जो किसी सूरत में इंसान की मुखालिफत किए बगैर नहीं रह सकता तो फिर शैतान से किस तरह अपने आप को बचाया जाये। शैतान से बचने के लिए हमेशा अल्लाह की पनाह मांगनी चाहिए और जब कोई ऐसा वाकिआ होता नजर आये जिस में शैतान बन्दा परवार कर रहा हो तो वक़्त अल्लाह की पनाह में रहने की दुआ मांगने के ऐलावा और कोई बेहतर सूरत नहीं हो सकती।

शैतान से बचने का दूसरा तरीका यह है कि शैतान से जिहाद किया जाये उसकी मुखालिफत के लिए इंसान को अल्लाह की अता करदा कुव्वत के ज़रिए शैतान के हमलों का जवाब देने के लिए तैयार रहना चाहिए। चुनांचि शैतान से बचने के लिए दोनों उसूलो पर अमल करना चाहिए। फिर कभी कभी ऐसा भी होता है कि अल्लाह से पनाह मांगने के बावजूद शैतान को मुखालिफत करने की इजाज़त मिल जाती है और इस तरह से अल्लाह तआला अपने खास बन्दों का इम्तिहान लेता है।

शैतान से अल्लाह की पनाह मांगने का कसूर हम को नमाज़ से मिलता है क्योंकि नमाज में हम पढ़ते हैं कि मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ शैतान मरदूद से यह अलफाज़ पाँचों नमाजों में पढ़ते हैं उसका यह मतलब है कि इलाही मुझे एक नमाज़ से ले कर दूसरी नमाज़ तक शैतान की शरारतों से महफूज़ रख। (सुन्नी फज़ाइले अमाल, 75)

जब शैतान न था

जब इब्लीस शैतान नही बना था, तब गुनाहों का नाम व निशान भी न था। सभी मखलूख अल्लाह का ज़िक्र और फरमाबरदारी में मशगूल थे। लेकिन अल्लाह की नाफ़रमानी करने और आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा न करने की वजह से जब इब्लीस को अल्लाह ने मलऊन और मरदूद करार दिया तो इब्लीस इंसानो से दुश्मनी की क़सम खाते हुए बोला कि मैं सीधे रास्ते से इंसानो को गुमराह करूँगा और तेरा नाफ़रमान यानी नाशुक्रा बना दूंगा, उसके

बाद से भाई - भाई (काबिल - हाबिल) से झगड़ा, मियां बीवी से झगड़ा, सास बहू में झगड़ा, पास पड़ोस में झगड़ा, गाँव-गाँव, देश देश मे फ़ितना फ़साद, लालच, हसद, चोरी, क़त्ल, तकब्बुर, बेहयाई, गुनाह, हरामकारी, ज़िना, परेशानी, बेचैनी, नाफ़रमानी सब शुरू हुआ। इन तमाम फ़ितना फ़साद, गुनाहों से बचाने के लिए अल्लाह अंबिया अलैहिमुस्सलाम को भेजता रहा। लगभग 1 लाख 24 हज़ार अंबिया के आने का मक़सद यही था कि शैतान से बचा कर अल्लाह की इबादत की मुतवज्जह किया जाए और आसमानी किताबों के नुजूल का यही मक़सद था कि मख़लूक़ को शैतानी तरीके से बचाकर इसलामी तरीका दिया जाए। आख़री किताब कुरआन और आख़री पैगम्बर मुहम्मदﷺ को भेजने का भी यही मक़सद था कि दुनियादारी और शैतान से बचाकर, दीनदारी और इस्लाम को अपना कर अल्लाह तक पहुँचने का रास्ता बता दिया जाए। कुरआन, हदीस और अक़वाल पर मबनी शैतान से बचाने वाली येह किताब आप ज़रूर पढ़ें और ईमान की हिफ़ाजत करें।

हर जगह शैतान

मनकूल है कि जब अल्लाह तआला ने अपनी बारगाह से इब्लीस को निकाल दिया तो उसकी शैतान बीवी को उसी की बायीं पसली से पैदा किया जिस तरह हव्वा को हज़रते आदम से पैदा किया गया था। फिर उस औरत से शैतान ने जिमाअ किया वह हामला हो गई और उसने इकत्तीस अन्डे दिये। उसकी सारी नस्ल की असल यही 31 अन्डे हैं। फिर उस से शैतान की तमाम जुर्रियत फैली जिस से

खुश्की और समन्दर पट गए यहां तक कि हर अन्डे से दस हजार नर व मादा पैदा हुए जिन्होंने पहाड़ों पर, जज़ीरों, वीरानों, जंगलों, दरियाओं, रेगिस्तानों, बयाबानों, चश्मों, चौराहों, हम्मामों, पाखानों, फुरजों, जंग व जिदाल के मैदानों, करना फूंकने के मैदानों, क़ब्रस्तानों, घरों, काठियों, बहुओं के खेमों ग़र्ज़ कि जुमला जगहों को भर दिया। (गुनियतुत्तालिबीन, बाब 10 , 248)

हर इंसान के साथ शैतान

इमाम मुस्लिम उम्मुल मोमिनीन आयशा रदिअल्लाहु त'आला अन्हा से रिवायत करते हैं रसूलﷺ एक रात उनके पास से बाहर तशरीफ ले गए उम्मुल मोमिनीन हज़रते आयशा रदिअल्लाहु त'आला अन्हा फरमाती हैं मुझे फिक्र हुई (कि शायद आप किसी और ज़ौजह मुतहरा (बीवी) के पास तशरीफ ले गए है) जब आप वापस तशरीफ लाए और मुझे देखा तो फ़रमाया ऐ आइशा तुम्हें क्या हो गया क्या तुम मुतफक्क़िर हो ? मैंने अर्ज़ किया मुझ जैसे को आप जैसे पर कोई धोखा नही दे सकता। रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या तुम्हारे पास तुम्हारा शैतान आ गया। (तुझे तेरे शैतान ने वसवसे में डाल दिया है) मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या मेरे साथ शैतान है? रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया हां , मैने अर्ज़ किया क्या हर इंसान के साथ शैतान होता है? हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया हां। फिर मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम किया आपके साथ भी है। फरमाया हां

लेकिन मेरे रब ने उस पर मेरी मदद फरमायी हत्ता कि वो मुसलमान हो गया। (जिन्नों की दुनिया, पेज 189)

काफिर का शैतान और मोमिन का शैतान

एक रिवायत में आया है के मोमिन और काफिर के शैतानों की आपस में मुलाकात हुई तो मोमिन का शैतान कमज़ोर था और काफिर का शैतान मोटा ताज़ा तो काफिर के शैतान ने मोमिन के शैतान से पूछा तुम कमजोर क्यों हो? उसने कहां किया बताऊ उसके पास मेरा कोई हिस्सा नहीं जब वो घर में दाखिल होता है अल्लाह तआला का ज़िक्र करता है जब खाना खाता है तो अल्लाह तआला का ज़िक्र (बिस्मिल्लाह) करता है जब पीता है तो अल्लाह त'आला का ज़िक्र करता है। काफिर के शैतान ने कहा लेकिन मैं तो उसके साथ खाता भी हूँ पीता भी हूँ इसलिए मोटा ताज़ा हूँ, और उसके साथ बिस्तर पर सोता भी हूँ। लेकिन मोमिन का शैतान मोमिन से छुपा रहता है और उसकी ताक में लगा रहता है के मोमिन अपनी अकल से कब ग़ाफ़िल होता है के वो उससे फायदा उठाए शैतान ज़्यादा खाने वाले और ज्यादा सोने वाले इंसान को ज्यादा पसंद करता है। (जिन्नो की दुनिया, 193)

शैतान इंसान की रगों में

हदीसः हज़रत अ़ली बिन हुसैन रदी़अल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने कहा नबीएﷺ पाक ने इरशाद फ़रमाया - बेशक शैता़न इंसान के रगों में खूंन की तरह दौड़ता है।(मकाइदुश्शैतान, इब्ने

अबिद्दुनिया)

इंसान के साथ कितने शैतान होते हैं और कब मरते हैं?:-

इब्ने अबिद्दुनिया हज़रते आसिम अहूल से रिवायत करते हैं वो फ़रमाते हैं, मैंने हज़रते रबीअ बिन अनस रदीअल्लाहु अन्हु से पूछा कि क्या यह शैतान जो इंसान के साथ रहता है वो मरता नहीं? तो उन्होंने फ़रमाया यह कोई एक शैतान थोड़ी है बल्कि मुसलमानों को गुमराह करने के लिए तो क़बीलए रबीअह और क़बीलए मुदिर की तादाद के बराबर शैतान दर पै होते हैं। (जिन्नों की दुनिया, 187)

शयातीन इंसान की सूरत में ज़ाहिर होकर दीन में फ़साद करेंगे:-

तबरानी हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर रदिअल्लाहु त'आला अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाहﷺ ने इरशाद फ़रमाया-(तर्जमा) हज़रते सुलैमान बिन दाऊद अलैहिमुस्सलाम ने शैतान को समन्दर में कैद कर दिया था, वो ज़माना क़रीब है जब शैतान तुम में ज़ाहिर होंगे, तुम्हारे साथ तुम्हारी मस्जिदों में नमाज़ पढ़ेंगे और तुम्हारे साथ कुरआन पढ़ेंगे और तुम्हारे साथ दीन के मामले में झगड़ा फ़साद करेंगे, ख़बरदार येह इंसान की शक्ल में शैतान होंगे।(जिन्नों की दुनिया)

वो माल शैतान के राह में

एक दिन हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम एक जगह बैठे हुये थे कि एक हट्टा कट्टा नो जवान आप के करीब से गुज़रा, और बाज़ार में एक दुकान के अन्दर चला गया सहाबा किराम ने कहा। ऐ काश ! उस शख्स का यूँ सुबह सवेरे उठना राहे हक़ में होता ! हुजूर ने फ़रमाया" यूँ न कहो, क्योंकि अगर उस का जाना उस ग़र्ज़ से है कि वह अपने आप को और अपने बाल बच्चों को दुनिया की मोहताजी से बचाये या इस लिए कि अपने माँ बाप को किसी का दस्ते नगर न होने दे तो समझो कि यह राहे हक़ ही में जा रहा है। हाँ अगर उसका मकसद फख़र व नाज़ लाफ़ व गज़ाफ़ (शोहरत) की ख़ातिर इमारत व दौलत की तलाश है तो वह राहे शैतान पर गामज़न है और फ़रमाया कि जो शख्स दुनिया में रिज़्क हलाल का तलाश कर रहे ताकि दुनिया का दस्तनगर न होने पाये और हमसायों से नेक सुलूक करे और खेश व अकारिब से तलत्तु व मदारात से पेश आये, उस का चेहरा क़ियामत के दिन यूँ होगा जैसे कि चौदहवीं का चाँद (सुन्नी फजाईले आमाल, 694)

मोमिन का शैतान लाग़र और कमज़ोर होता है :-

हदीस : हज़रते अब्दुल्लाह रदीअल्लाहु अन्हु ने फरमाया - मोमीन का शैतान लाग़र और नातवां (कमज़ोर) होता है। (मकाइदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)

मोमिन और शैतान के बीच झगड़ा :

हदीस : हज़रत इब्ने लहीअह मूसा बिन विरदान से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा कि सरकारﷺ ने इरशाद फ़रमाया- बेशक मोमिन अपने शैतान को उसी तरह कमज़ोर कर देता है जैसे कि तुम में से कोई सफर में अपने ऊँट को कमज़ोर करता है। (मकाइदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)

इंसान के जिस्म के हिस्से में शैतान रहता है:

हदीस : हज़रते ख़ालिद बिन मेअरान से रिवायत है, उन्होंने कहा हर इंसान की रीढ़ की हड्डी से शैतान चिमटा रहता है, अपनी गर्दन उसके कंधे से लटकाए रहता है और उसके दिल पर अपना मुंह खोले रखता है।

शैतान बावला कर देता है:-

जिन्न मिर्गी वाले के जिस्म में दाख़िल होता है या नहीं?- फ़िरक़ा ए मो'तज़िला के एक गिरोह ने इस बात का इनकार किया है कि जिन्नात मिर्गी वाले के बदन में दाख़िल हो। हज़रते इमाम अबुल हसन अशहरी रहमतुल्लाहि अलैह बयान फ़रमाते हैं कि अहले सुन्नत व जमात का मज़हब यह है कि जिन्न मिर्गी वाले के जिस्म में दाख़िल हो जाता है। चुनाँचे अल्लाह तबारक व त'आला इरशाद फ़रमाता है: "जो लोग सूद खाते हैं वो क़यामत के दिन (अपनी क़ब्रों से) ऐसे उठेंगे जिस तरह वो शख़्स उठता है जिसको शैतान

(आसेब) ने छूकर बावला कर दिया है (पारा 3,सूरह बक़र, आयत 275)"

इब्लीस उस बन्दे को ले जाता है

हदीस : हज़रते साबित रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है ,वो कहते है कि मुतरफ ने कहा: मैंने ग़ौर किया तो इंसान को अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल और इब्लीस के दरमियान पड़ा हुआ पाया तो अगर अल्लाह उसको बचाना चाहे तो बचा लेता है वरना उसे इब्लीस ले जाता है।

इब्लीस ने क़त्ल करने का तरीका बताया

आदम अलैहिवस्सलाम के दोनों बेटे काबिल और हाबील के बीच शैतान दुश्मनी पैदा करा दिया। काबिल को क़त्ल करने की तरीका नही आती थी क्योंकि इससे पहले दुनिया मे क़त्ल नही किया गया, इब्लीस जानवर की शक्ल में काबिल के सामने आया उसके पंजे में एक और जानवर था उसने उस जानवर का सर पत्थर पर रख कर दूसरे पत्थर से कुचल दिया जिससे वह जानवर मर गया तब काबिल को क़त्ल करने का तरीका आया एक दिन हाबील अपने जानवर किसी पहाड़ी पर चरा रहे थे दोपहरी में किसी सायादार दरख़्त के नीचे सो गए, काबिल ने बड़ा वजनी पथर उनके सर पर मारा जिससे उनका सर कुचल गया और वह फौत हो गए। (तफसीरे नईमी)

शैतान की हक़ीकत

शैतान का नाम पहले आसमान पर आबिद, दूसरे पर ज़ाहिद, तीसरे पर आरिफ, चौथे पर वली, पांचवे पर मुत्तकी, छठे पर अज़ाज़ील और लौहे महफूज पर इबलीस था। वह अपनी आकिबत से बे फिक्र था जब उसे हजरते आदम को सज्दा करने का हुक्म मिला तो कहने लगा ऐ अल्लाह! तू ने इसे मुझ पर फजीलत दे दी हालांकि मैं इस से बेहतर हूं, तू ने मुझे आग से और इसे मिट्टी से पैदा किया है। खुदावन्द तआला ने फ्रमाया मैं जो चाहता हूं वह करता हूं। शैतान ने अपने आप को आदम अलैहिस्सलाम से बेहतर समझा और नंग व तकब्बुर की वजह से आदम से मुंह फेर कर खड़ा हो गया। जब फ़रिश्ते आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा कर के उठे तो उन्हों ने देखा कि शैतान ने सज्दा नहीं किया तो वह दोबारा सज्दए शुक्र में गिर गये लेकिन शैतान उन से वे तअल्लुक खड़ा रहा और उसे अपने इस काम पर कोई पशेमानी न हुई, तब अल्लाह तआला ने उसकी सूरत बिगाड़ दी। खिनज़ीर (सुअर) की तरह लटका हुआ मुंह, सर ऊँट के सर की तरह, सीना बड़े ऊँट की कोहान जैसा, उन के बीच चेहरा ऐसे जैसे बन्दर का चेहरा, आंखें खड़ी, नथने हज्जाम के कूजे (बर्तन) जैसे खुले हुए, होंट बैल के होंटों की तरह लटके हुए, दांत खिन्ज़ीर की तरह बाहर निकले हुये और दाढ़ी में सिर्फ सात बाल, इसी सूरत में उसे जन्नत से नीचे फेंक दिया गया बल्कि आसमान व

ज़मीन से जज़ीरों की तरफ फेंक दिया गया। वह अब अपने कुफ्र की वजह से जमीन पर छुपते-छुपते आता है और कियामत तक के लिए लानत का मुस्तहिक बन गया है। शैतान कितना खूबसूरत, हसीन, कसीरुल इल्म (ज्यादा इल्म वाला), कसीरुल इबादत (ज्यादा इबादत करने वाला), फ़रिश्तों का सरदार, मुकर्रबीन का सरखैल था मगर उसे कोई चीज, अल्लाह के ग़ज़ब से न बचा सकी। बेशक इस में अक्लमन्दों के लिए इबरत है।

एक रिवायत में है कि जब अल्लाह तआला ने शैतान की पकड़ की तो जिबरील व मीकाईल रोने लगे। रब ने फरमाया क्यों रोते हो? अर्ज की ऐ अल्लाह! तेरी पकड़ के खौफ से रोते हैं। इरशाद हुआ इसी तरह मेरी पकड़ से रोते रहना। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 12, पेज 90)

गुनाह कराने वाले शैतानी ख़ानदान

कुरआन : "ख़बरदार तुम्हें शैतान फ़ितने (मुसीबत) में न डाले जैसा तुम्हारे मां बाप को बहिश्त (जन्नत) से निकाला उतरवा दिये उनके लिबास कि उनकी शर्म की चीजें उन्हें नज़र पड़ी, बेशक वह (शैतान) और उसका कुम्बा (शैतानी फौज) तुम्हें वहां से देखते हैं कि तुम उन्हें नही देखते बेशक हमने शैतानों को उनका दोस्त किया है जो ईमान नही लाते" (सुरह: अराफ, आयत न 27)

हदीस : मकातिल ने बारिवायत जहरी बवासता उमर, हज़रते

आइशा से बयान किया कि उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबाए किराम एक रात हुजूर की तलाश में आए उन सहाबा में हज़रत अबू बकर सिद्दीक, हज़रत उमर फारूक, हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत सलमान और अम्मार बिन यासिर शामिल थे। उन असहाब के पहुंचने पर रसूलुल्लाह बाहर तशरीफ लाए और हालत यह थी कि बुखार की वजह से आप की मुबारक पेशानी पर पसीने के कतरात मोतियों की तरह चमक रहे थे। फिर हुजूर ने अपनी मुबारक पेशानी पर हाथ फेर कर फरमाया: अल्लाह त'आला मलऊन पर लानत करे आप ने तीन मरतबा फरमाया इसके बाद सरे अकदस झुका लिया, हजरत अली मुर्तज़ा ने अर्ज़ किया मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों, इस वक्त आप ने किस पर लानत फरमाई? हुजूर ने फरमाया खुदा के दुशमन इब्लीस ख़बीस पर! उसने अपनी दुम दुबुर (पीछे के मकाम) में डाल कर सात अंडे निकाले और उनसे उसकी औलाद हुई फिर उनको बनी आदम के बहकाने पर उसने मामूर किया उन सात में से एक का नाम मदहश है जिस को उलमा (के वरगलाने) पर मुक़र्रर किया गया चनान्चे वह औलमा को मुख़तलिफ ख्वाहिशात की तरफ ले जाता है, दूसरे का नाम हदबस है जो नमाज़ पर मुकर्रर हैं नमाजियों को जिक्रे इलाही से हटा कर इधर उधर लहव व लइब में लगा देता है और उनको जमाही और औंघ में मुब्तला कर देता है। पस इस तरह नमाज़ियों में से कोई सो जाता है और जब कोई कहता है कि सो गए? तो वह कहता है नही मैं तो नही सोया! इस तरह वह नमाज़ में बग़ैर वजू के रह जाता है। क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जान है कि उनमें से कोई

नमाज़ी इस हाल में निकलता है कि उसको आधी नमाज़ क्या बल्कि चौथाई नमाज़ के दसवें हिस्से का भी सवाब नही मिलता बल्कि ऐसी नमाज़ का गुनाह सवाब से बढ़ जाता है।शैतान की तीसरी औलाद का नाम ज़लबनून है। बाज़ारों में मुक़र्रर है वह लोगों को कम तोलने और झूट बोलने पर उकसाता है, माल बेचते वक्त दुकानदारों को माल की झूटी तारीफ पर उभारता है ताकि अपना माल फरोख्त कर के रोज़ी कमाए। चौथे का नाम बतर्रर है वह लोगों को गिरेबान चाक करने, मुंह नोचने और मुसीबत के वक़्त वावैला कराने पर मुकर्रर है (लोग मुसीबत पड़ने पर हाए वावैला करते हैं) ताकी मुसीबत के अज्र व सवाब को (फरयाद व गां करा के) ज़ाया करा दे। पांचवें का नाम मनशूत है यह दरोग गोई, चुगुल खोरी, तअन व तशनीअ करने पर मुकर्रर है। छटे का नाम वासिम है। यह शर्मगाहों पर मुक़र्रर है। चुनान्चे यह मर्द और औरत की शर्मगाहों पर फूंक मारता है ताकि वह एक दूसरे के साथ ज़िना में मुब्तला हों, सातवें का नाम अऊर है, यह चोरी पर मामूर है यह चोर से कहता है कि (माल चोरी कर) कि चोरी तेरे फाका को दूर कर देगी, तेरा क़र्ज़ अदा हो जाएगा और तेरी तन पोशी भी हो जाएगी बाद को तौबा कर लेना, लिहाज़ा हर मुसलमान का का फर्ज़ है कि वह किसी हालत में भी शैतान से ग़ाफिल न रहे और अपने कामों में उससे बे खौफ हो कर न बैठ जाए।

एक हदीस में आया है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि वजू पर एक शैतान मुक़र्रर है जिस का नाम वलहान है तुम उससे अल्लाह की पनाह मांगो। नमाज़ की सफ़ों में

मिल कर खड़े होने की भी आप ने हिदायत फ़रमाई है ताकि शैतान बकरी के बच्चे की (हज़फ़) की तरह सफ़ों में न घुस आए।

हज़फ़ हिजाज़ की उन छोटी छोटी बकरियों को कहते हैं जिनके न दुम होती है और न कान, ऐसी बकरियां यमन के मक़ामे जर्श में पैदा होती हैं। (गुनियतुत्तालिबीन, बाब 10 , 246)

शयातीन ही इल्मे दीन हासील करने से रोकते है

हिकायत : एक रोज़ अस्र के बाद शैतान ने अपना तख्त बिछाया, और शयातीन ने अपनी अपनी कार गुज़ारी की रिपोर्ट पेश करना शुरू की किसी ने कहा कि मैंने इतनी शराब पिलाई, किसी ने कहा मैंने इतने ज़िना कराए, शैतान ने सब की सुनी, एक ने कहा कि मैने एक तालिबे इल्म को पढ़ने से बाज़ रखा, शैतान सुनते ही तख्त पर से उछल पड़ा और उस को गले से लगा लिया और कहा, "अन् त तूने काम किया तूने काम किया, दूसरे शयातीन यह कैफियत देख कर जल गए कि उन्होंने इतने बड़े काम किये, उन पर तो शैतान खुश नहीं हुआ और इस मअमूली से काम करने वाले पर इतना खुश हो गया। शैतान बोला तुम्हें नहीं मलूम जो कुछ तुमने किया सब इसी का सदक़ा है उन्हें इल्म होता तो वह गुनाह नहीं करते, लो मैं तुम्हें दिखाता हूँ, वह कौनसी जगह है जहाँ सब से बड़ा आबिद रहता है मगर वह आलिम नहीं और वहाँ एक आलिम भी रहता हो तो उन्होंने एक मक़ाम का नाम लिया, सुबह को सूरज निकलने से पहले शयातीन को लिए हुए शैतान उस मकाम पर पहुँचा, शयातीन छुपे रहे और यह इन्सान की शक्ल बनकर रास्त में खड़ा हो गया, आबिद

साहिब की नमाज़ तहज्जुद के बद फर्ज़ के वास्ते मस्जिद की तरफ तशरीफ लाए रास्ते में शैतान खड़ा था, अस्सलामु अलैकुम, व अलैकुम सलाम के बद कहा हज़रत मुझे एक मसला पूछना है आबिद साहिब ने जल्दी पूछों, मुझे नमाज़ के लिए मस्जिद में जाना है, शैतान ने जेब से एक छोटी सी शीशी निकाली और पूछा, क्या अल्लाह क़ादिर है कि उन सारे आसमानों और ज़मीनों को इस छोटी सी शीशी में दाखिल करदे, आबिद साहिब ने सोचा और कहा कहाँ इतने बड़े आसमान और ज़मीन और कहाँ यह छोटी सी शीशी बोला बस यही पूछना था तशरीफ़ ले जाईए और शयातीन से कहा, देखो मैंने इस की राह मार दी उसको अल्लाह की कुदरत पर ही ईमान नहीं इबादत किस काम की, फिर सूरज निकलने के क़रीब एक आलिम जल्दी जल्दी करते हुए तशरीफ़ लाए शैतान ने कहा अस्सलामु अलैकुम मुझे एक मसला पूछना है आलिम ने फ़रमाया, पूछो जल्द पूछो नमाज़ का वक़्त कम है, उसने शीशी दिखाकर वही सवाल किया, आलिम साहिब ने फ़रमाया मलऊन तू शैतान मालूम होता है, अरे वह क़ादिर है कि यह शीशी तो बहुत बड़ी है एक सुई के नाके के अंदर अगर चाहे तो करोड़ों आसमान व ज़मीन दाखिल करदे, "इन्नल्लाह अला कुल्लि शै इन क़दीर आलिम साहिब के तशरीफ़ ले जाने के बद शैतान ने शयातीन से कहा, देखा यह इल्म ही की बरकत है और वह जिसने इल्म हासिल करने वाले को पढ़ने से रोका उसने बहुत बड़ा काम किया ताकि वह न पढ़े और न आलिम बन सके। (मलफूजाते आला हज़रत जि:3, स:21-22)

सबक: अब तो शैतान को खुश करने वाले न बनो दीन कि किताबो

को पढो शैतान से इल्म के जरिये लड़ो, ईमान बचने के लिए दीन का इल्म बहुत बड़ी जरूरी और मुफीद चीज़ है, शैतान ऐसे इल्म वालो से बहुत डरता है क्यों कि इल्म वाले अपने इल्म की वजह से शैतान के जाल में नहीं फंसता, बिगैर इल्म के जुहद व इबादत भी ख़तरे में रहती है, खूद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है"फ़क़ीहुन वाहिदुन अशहु अल-शैतानि मिन-अल्फि आबिदिन" यअ़नी शैतान पर एक आलिम हज़ार आबिद से भी ज़्यादा भारी है।"

कुरआन में शैतान का ज़िक्र

इंसानी शैतान और जिन्नाती शैतान

अल्लाह फ़रमाता है: इसी तरह हमने हर नबी के दुश्मन किये हैं आदमियों और जिन्नों में के शैतान कि उनमें एक दूसरे पर खुफिया डालता है बनावट की बात धोखे को और तुम्हारा रब चाहता तो वो ऐसा न करते तो उन्हें उनकी बनावटों पर छोड़ दो (सूरह अनाम, आयत न. 112)

इन्सानी शैतान

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अबू ज़र रदीअल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया अल्लाह की पनाह मांग शैतान आदमियों और शैतान जिन्नों के शर से, अर्ज़ किया आदमियों में भी शैतान हैं? फरमाया हाँ (मुस्नद अहमद)

फरमाने ग़ौसे आज़म

दुनिया और दुनिया वाले (दुनियादार) सब शैतान की फ़ौज और उसका गिरोह है। (गुनियतुत्तालिबीन, बाब 10 , पेज 245)

शैतान और इन्सान आपस में दुश्मन है

अल्लाह फ़रमाता है: तो शैतान ने जन्नत से उन्हें लग़ज़िश (डगमगाहट) दी और जहां रहते थे वहां से उन्हें अलग कर दिया और हमने फ़रमाया नीचे उतरो आपस में एक तुम्हारा दूसरे का दुश्मन और तुम्हें एक वक्त़ तक ज़मीन में ठहरना और बरतना है। (सूरह बक़रह, आयत न. 36)

शैतान को दुश्मन जानो

अल्लाह फ़रमाता है: बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे दुश्मन समझो वह तो अपने गिरोह को इसीलिये बुलाता है कि दोज़खियों में हो।(सुरह फ़ातिर, आयत न. 6)

शैतान से बचता रह

अल्लाह फ़रमाता है: ऐ मुसलमान अल्लाह के उतारे (कुरआन के मुताबिक)पर हुक्म कर और उनकी (शैतान की) ख़्वाहिशों पर न चल और उनसे (शैतान से)बचता रह कि कहीं तुझे लग़ज़िश (धोखा) न दे दें। (सूरह माएदा, आयत न. 49)

शैतान से बचो

अल्लाह फ़रमाता है: अल्लाह को पूजो और शैतान से बचो। (सूरह हिज़्र, आयत न. 36)

शैतान तुम्हें धोखा न दे

अल्लाह फ़रमाता है: हरगिज़ तुम्हें धोखा न दे दुनिया की ज़िन्दग़ी और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर फ़रेब न दे वह (शैतान) बड़ा फ़रेबी।(सुरह फ़ातिर, आयत न. 5)

ऐ इंसान ख़बरदार

अल्लाह फ़रमाता है : ऐ आदम की औलाद ख़बरदार तुम्हें शैतान फ़ितने (मुसीबत) में न डाले जैसा तुम्हारे मां बाप को बहिश्त (जन्नत) से निकाला, उतरवा दिये उनके लिबास कि उनकी शर्म की चीजें़ उन्हें नज़र पड़ी, बेशक वह और उसका कुनबा (खानदान) तुम्हें वहां से देखते हैं कि तुम उन्हें नहीं देखते बेशक हमने शैतानों को उनका दोस्त किया है जो ईमान नहीं लाते (सूरह आराफ़, आयत न. 27)

शैतान इंसान का खुला दुश्मन है।

अल्लाह फ़रमाता है: ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे दाख़िल हो और शैतान के क़दमों पर न चलो बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (सूरह बक़रह, आयत न. 208)

शैतान क्या चाहता है।

अल्लाह फ़रमाता है: शैतान तुम्हें अन्देशा (आशंका) दिलाता है मोहताजी का और हुक्म देता है बेहयाई का और अल्लाह तुमसे वादा फ़रमाता है बख़्शिश(इनाम) और फ़ज़्ल का और अल्लाह वुसअत (विस्तार) वाला इल्म वाला है। (सूरह बक़रह, आयत न. 268)

मैं उन्हें पीस डालूँगा

अल्लाह फ़रमाता है: (शैतान) बोला देख तो जो यह तूने मुझसे इज़्ज़त वाला रखा अगर तूने मुझे क़यामत तक मुहलत दी तो ज़रूर मैं उसकी (आदम की) औलाद को पीस डालूंगा मगर थोड़ा (ईमान वालो के अलावा) (सूरह बनी इस्राएल, आयत न. 62)

शैतान के दोस्तों

अल्लाह फ़रमाता है: ईमान वाले अल्लाह की राह में लड़ते हैं और कुफ्फार शैतान की राह में लड़ते हैं तो शैतान के दोस्तों से लड़ो बेशक शैतान का दाव कमज़ोर है।(सूरह निसा, आयत न. 76)

शैतान इंसानो का हिस्सा लेगा

अल्लाह फ़रमाता है: जिसपर अल्लाह ने लाअनत की और बोला क़सम है मैं ज़रूर तेरे बन्दों में से कुछ ठहरा हुआ हिस्सा लूंगा। ।(सूरह निसा, आयत न. 118)

वोह आरजुएं दिलाएगा

अल्लाह फ़रमाता है: क़सम है मैं (शैतान) ज़रूर उन्हें (इंसानो को) बहकादुंगा और ज़रूर उन्हें आरजुऐं दिलाऊंगा और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वो चौपायों के कान चीरेंगे और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वो अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ें बदल देंगे और जो अल्लाह को छोड़कर शैतान को दोस्त बनाये वह सलीम घाटे में पड़ा। ।(सूरह निसा, आयत न. 119)

शैतान ने उन्हें धोखा दिया

अल्लाह फ़रमाता है: बेशक वो जो अपने पीछे पलट गए बाद इसके कि हिदायत उनपर खुल चुकी थी शैतान ने उन्हें धोखा दिया और उन्हें दुनिया में मुद्दतों रहने की उम्मीद दिलाई।(सूरह मोहम्मद, आयत न. 25)

काफ़िरों को दोस्त न बनाओ

अल्लाह फ़रमाता है: ऐ ईमान वालो काफ़िरों को दोस्त न बनाओ मुसलमानों के सिवा, क्या यह चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह के लिये सरीह हुज्जत कर लो।(सूरह निसा, आयत न. 144)

अल्लाह फ़रमाता है: ऐ ईमान वालो यहूदियों और ईसाइयों को दोस्त न बनाओ वो आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं और तुम में जो कोई उनसे दोस्ती रखेगा तो वह उनहीं में से है बेशक अल्लाह बे इन्साफ़ों को राह नहीं देता। (सूरह माएदा, आयत न. 51)

शैतान से अल्लाह की पनाह मांग

अल्लाह फ़रमाता है: ऐ सुनने वाले अगर शैतान तुझे कोई कौंचा (वसवसा) दे तो अल्लाह की पनाह मांग बेशक वही सुनता जानता है।(सूरह अराफ, आयत न. 200)

डर वाले होंशियार हैं

अल्लाह फ़रमाता है: बेशक वो जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैतानी ख़याल (गुनाह वस्वसा) की ठेस लगती है होशियार हो जाते हैं उसी वक़्त उनकी आँखें खुल जाती हैं। (सूरह अराफ, आयत न. 201)

मैं उन सबको गुमराह करूँगा

शैतान बोला ऐ रब मेरे क़सम इसकी कि तूने मुझे गुमराह किया मैं उन्हें ज़मीन में भुलावे दूंगा और ज़रूर मैं उन सब को बेराह करूंगा। ।(सूरह हिज्र, आयत न. 39)

शैतान बेहयाई और बुरी ही बात बताएगा

अल्लाह फ़रमाता है: ऐ ईमान वालो शैतान के क़दमों पर न चलो, और जो शैतान के क़दमों पर चले तो वह तो बेहयाई और बुरी ही बात बताएगा और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती तो तुम में कोई भी कभी सुथरा न हो सकता हाँ अल्लाह सुथरा कर देता है जिसे चाहे और अल्लाह सुनता जानता है।(सूरह नूर, आयत न. 21)

शैतान को मदद कौन देता है

अल्लाह फ़रमाता है: काफ़िर अपने रब के मुक़ाबिल शैतान को मदद देता है।(सूरह फुरकान, आयत न. 55)

बोहतान वालों पर शैतान

अल्लाह फ़रमाता है: क्या मैं तुम्हें बतादूँ कि किस पर उतरते हैं शैतान, उतरते हैं हर बड़े बोहतान वाले गुनहगार पर। (सूरह शु'अरा, आयत न. 221-222)

खिनज़ब कौन है

हज़रत उसमान बिन आस ने फरमाया कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया मेरी नमाज़ और मेरी किरअत में शैतान ख़लल डालता है, हुजूर ने इरशाद फरमाया, उसका नाम ख़िनज़ब है जब तुम को उसका एहसास हो तो अल्लाह की पनाह मांगो (आऊजुबिल्लाह पढ़ो) और बाईं तरफ को तीन बार थुतकार दो। हज़रत उसमान ने अर्ज़ किया कि मैंने ऐसा ही किया है और अल्लाह ने उसको मुझ से दूर कर दिया है।

इन्सानों पर शैतान का ग़लबा

शैतान ने अल्लाह से कहा- ऐ अल्लाह! तू ने मुझे जन्नत से निकाला तो आदम के सबब, अब मुझे औलादे आदम पर ग़ल्बा अता फरमा, खुदा तआला ने फरमाया- मैं ने तुझे नबियों के इलावा जिन की इस्मत मुसल्लम है, आदम की औलाद पर ग़ल्बा दिया। शैतान बोला

कुछ और? अल्लाह तआला ने फ़रमाया जितनी आदम की औलाद होगी उतनी ही तेरी औलाद होगी। शैतान बोला कुछ और? खुदावन्दे कौनैन ने फरमाया- मैं ने उन के सीनों को तेरा मस्कन बनाया, तू उन में खून की तरह गदिश करेगा, अर्ज़ की कुछ और? फरमाने इलाही हुआ- अपने सिवा और प्यादा मददगारों से मदद मांग कर उन्हें हराम माल की कमाई पर आमादा करना, उन्हें हैज़ के दिनों वगैरह में मुजामिअत से औलादे हराम का हक़दार बनाना और हरामकारी की वजहें पैदा करना, उन्हें मुशरिकाना नाम सिखाना जैसे अब्दुलउज्ज़ा वगैरह, इन्हें गन्दी बातें, बुरे अफ़आल और झूटे मज़हबों के ज़रिए गुमराह करना, इन्हें झूटी तसल्लियां देना जैसे झूटे मअबूदों की शफाअत, आबा व अजदाद की कामो और तरीको पर फख़र, लम्ची उम्मीदों के ज़रीये तौबा में देर वगैरह और यह सब कुछ डराने के तौर पर था जैसा कि फरमाने इलाही है- तुम जो चाहो करो"

आदम अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की ऐ अल्लाह! तूने मेरी औलाद पर इबलीस को मुसल्लत कर दिया, अब उससे रिहाई तेरी रहमत के बग़ैर कैसे होगी? खुदा ने फ़रमाया- तेरे हर एक फरज़न्द के साथ मैं मुहाफिज़ (हिफाजत के) फ़रिश्ते बनाऊंगा। अर्ज़ की अभी कुछ और! फरमाने इलाही हुआ एक नेकी का सवाब उन्हें दस गुना मिलेगा। अर्ज की अभी कुछ और! फरमाने इलाही हुआ। उन के आखिरी सांस तक उन की तौबा क़बूल करूंगा। अर्ज की कि कुछ और अता फरमा! फ़रमान हुआ उन के लिए बख़्शिश आम कर दूंगा, मैं बे नियाज़ हूं। आदम अलैहिस्सलाम बोले! ऐ मेरे रब यह काफ़ी है।

शैतान ने कहा ऐ अल्लाह! तू ने आदमी की औलाद में नबी बनाये, उन पर किताबें नाज़िल की, मेरे रसूल और किताबें क्या हैं? जवाब आया मैं तेरे रसूल और गुदी हुई खालें तेरी किताबें झूट तेरी हदीसें झूट, तेरा कुरआन शेअर (जादू), तेरे मुअज्ज़िन (अपनी तरफ बुलाने का लिए बाजे, गाना, म्यूजिक, ढोल) तेरी मस्जिद बाज़ार, तेरा घर पखाना घर, तेरा खाना वह जिस पर मेरा नाम न लिया गया हो। तेरा पानी शराब, नशीली चीज़ और औरतें तेरा जाल हैं। (मुकाशफ़ुतुल कुलूब, पेज 92)

हसद और लालच शैतान की तरफ़ से

हदीस : हज़रते लैस से रिवायत है उन्होंने कहा हज़रते नूह अलैहिस्सलाम से इब्लीस ने मुलाक़ात की और कहा : ऐ नूह हसद (जलन) और हिर्स (लालच) से बचो क्योंकि मैंने हसद किया तो ज़न्नत से निकाल दिया गया, और आदम ने शजरहे ममनूआह (जिस दरख़्त का फल खाने से उन्हें रोका गया था) पर लालच किया तो जन्नत से निकाल दिए गए।

मछलियों की ज़बान क्यूँ छिन गई

अल्लाह तआला ने तमाम जानवरों के मुँह में ज़बान पैदा की है मगर मछली को ज़बान नहीं दी गई, इस की वजह यह है कि जब खुदा के हुक्म से फ़रिश्तों ने आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा किया और इबलीस, रजीम होकर बिगड़ी हुई शक्ल में ज़मीन पर फेंक दिया गया तो वह समुन्दरों की तरफ गया, उसे सब से पहले मछली नज़र

आई जिसे उसने आदम अलैहिस्सलाम की तख्लीक (पैदाइश) का किस्सा सुनाया और यह भी बताया कि वह बहर व बर (पानी और खुश्की) के जानवरों का शिकार करेगा तो मछली ने तमाम दरियाई जानवरों तक हज़रते आदम की कहानी कह सुनाई। इसी वजह से अल्लाह तआला ने उसे ज़बान के शरफ से महरूम कर दिया।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 20 , पेज 141)

खाने के वक़्त शैतान से सावधान

हदीस :- सहीह मुस्लिम शरीफ में हुज़ैफा रदियल्लाहु त'आला अन्हु से मरवी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस खाने पर बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाए शैतान के लिए वह खाना हलाल हो जाता है यानी बिस्मिल्लाह न पढ़ने की सूरत में शैतान उस खाने को खाता है। (बहारे शरीयत, हिस्सा 16)

शैतान इंसान के साथ खाना चाहता है

हज़रत हुज़ैफा रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं खाना खाते वक़्त हम उस वक़्त तक खाना न खाते जब तक हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शुरूअ न फरमा लेते। एक रोज़ हम एक दावत में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ गए खाना चुना गया तो एक छोटी लड़की आई और उसने जल्दी से अपना हाथ खाने की तरफ बढ़ाया हुजूर ने उस का हाथ पकड़ लिया फिर एक देहाती आया ! उसने भी जल्दी से अपना हाथ खाने की तरफ बढ़ाया हुजूर ने उस

का हाथ भी पकड़ लिया और फरमाया शैतान चाहता है कि खाना बगै़र बिस्मिल्लाह पढ़ने के खाया जाए ताकि वह भी शरीक हो सके। चुनाँचि वह उस लड़की के साथ आया ताकि बगै़र बिस्मिल्लाह पढ़ के खाना शुरू कर दिया जाये मैंने उसका हाथ पकड़ लिया फिर उस देहाती के साथ आया मैंने उसको भी हाथ पकड़ लिया उसके बाद हुजूर ने बिस्मिल्लाह पढ़ी और खाना शुरूअ फ़रमाया । (मिश्कात शरीफ स:360)

बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल गए तो ये दुआ पढ़ो

मसअला:- खाना बिस्मिल्लाह पढ़ कर शुरू किया जाए और ख़त्म करके अल्हम्दुलिल्लाह पढ़ें अगर बिस्मिल्लाह कहना भूल गया है तो जब याद आ जाए (खाना खत्म होने से पहले तक) यह कहे "बिस्मिल्लाहि फी अव्वलिही व आखिरिही"।(बहारे शरीयत, हिस्सा 16)

शैतान पानी कैसे पीता है

हज़रत अबु बकर मुहम्मद बिन शहाब ज़हरी रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत के रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैही वस्सलम जब पानी पीते तो तीन सांस में पीते। हुजूर सल्लाहु अलैहि वस्सलम ने एक सांस में गट- गट पीने से मना फ़रमाया(एक सांस में पीना) शैतान का तरीका है।(बैहकी)

सोने के वक़्त शैतान से सावधान

इब्ने अदी हज़रते अबु उमामा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फरमाया अल्लाह का नाम लेकर अपने दरवाज़े बंद करो और अपने बर्तनों को ढांको और अपने मश्कीजों के मुँह बांधो और अपने चरागों को बुझा दो, इसलिए कि ऐसा करने से उन (शयातीन) को दीवार फाँदने की इजाज़त नहीं दी जाती।(जिन्नों की दुनिया)

सोते वक्त सावधान

सोते वक्त किसी न किसी सूरत में अल्लाह का ज़िक्र करना ज़रूरी है क्योंकि ज़िक्रे इलाही से एक तो गुनाह माफ़ हो जाते हैं और दूसरे अल्लाह के ज़िक्र से रात भर इन्सान अल्लाह की पनाह में आ जाता है और उस पर अल्लाह की रहमत रहती है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब आदमी सोने के लिये अपने बिस्तर पर पहुँचता है तो उसी वक्त एक फ़रिश्ता और एक शैतान उसके पास आ पहुँचते हैं, फ़रिश्ता उससे कहता है। "अपने आमाल (कर्म) का ख़ातिमा भलाई पर करो" और शैतान कहता है "अपने आमाल का ख़ातिमा बुराई पर करो" फिर अगर वह आदमी खुदा का ज़िक्र करके सोया तो फ़रिश्ता रात भर उसकी हिफाज़त करता है। (अल-अदबुल मुफ़रद)

इस तरह सोना मना है-

सोते वक़्त इस बात का ख्याल रखें कि पेट के बल यानी उल्टे होकर न सोएं क्योंकि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पेट के बल

लेटने से मना फ़रमाया है। पेट के बल लेटना अख़लाकी तौर तरीकों के खिलाफ़ है और दूसरे ये कि शैतानी शर का ख़तरा होता है। तीसरे ये कि ड0क्टरी नुक्त-ए-नज़र से पेट से के बल लेटने से खाना अच्छी तरह हज़्म नहीं होता, चौथे ये के पेट के बल लेटने वाला बे तहज़ीब मालूम होता है, पाँचवें ये कि पेट के बल लेटने से बदन नंगा होने का डर होता है इसलिये उल्टा, पेट के बल सोना मना है।(आदाबे सुन्नत, पेज 150)

शैतान का बिस्तर

हज़रत क़ैस बिन अबू हिज़ाम ने कहा : जिस घर मे कोई बिस्तर बिछा हो और उस पर कोई सोता न हो तो उस पर शैतान सोता है। (मकाइदुस्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)

जब आप बिस्तर पर जाएँ

मैं (इमाम सुयुती) कहता हूँ इब्ने अबिद्दुनिया ने "मकाइदुस्शैतान" में और दीनावरी ने "अल मजालिसह' में हज़रते हसन बसरी से रिवायत करते है के नबी करीम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلّم ने फरमाया -: (तर्जमा) हज़रते जिब्रईल ए अमीन मेरे पास आए और उन्होंने कहा कि इफ़रीत (देव, भूत) जिन्नों में से है जो आप के साथ मक्र (अय्यारी) करता है लिहाज़ा आप जब भी अपने बिस्तर पर तशरीफ़ ले जाए तो आयतल कुर्सी पढ़ लिया करें। (जिन्नों कि दुनिया)

हमबिस्तरी के वक्त शैतान से सावधान

हुजूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं "जब तुम में कोई अपनी बीवी से सोहबत (हमबिस्तरी) करे तो पर्दा कर ले, बे पर्दा होगा तो फरिश्ते हया की वजह से बाहर निकल जाएंगे और शैतान आ जाएंगे, अब अगर कोई बच्चा हुआ तो शैतान की उस में शिर्कत होगी (यानी बच्चा बेहया पैदा होगा)। (गुनियतुत्तालिबीन सफा नं. 116)

औलाद का बे शर्म व बेहया होना

आला हज़रत रदीअल्लाहो तआला अन्हो एक जगह इरशाद फरमाते हैं- "बरहना (नंगी हालत में) रह कर सोहबत करने से औलाद के बे शर्म व बेहया होने का ख़तरा है" । (फतावा-ए-रज़विया, जिल्द 9 सफा 46)

आधी रात में शैतान से सावधान

शैतान की तीन बंदिशें(गिरह): हज़रते अबू हुरैरा रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलल्लाह सल्लल्लाहू त'आला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया: जब तुम में से कोई सोता है तो शैतान उसकी सर की दिमाग में तीन बन्दिश (गिरह) लगा देते है और गिरह पर ये वसवसा डालता है के अभी रात बहुत बाकी है सो जा फिर अगर वो सोने वाला बंदा जाग जाता है और अल्लाह का ज़िक्र करता है तो एक गिरह खुल जाती है, फिर जब वज़ू करता है तो दूसरी भी खुल जाती है फिर जब नमाज पढ़ता है तो सारी गिरहें खुल जाति है और

वो बंदा खुश दिल और बिशाश और पाक हो जाता है वरना वो सुबह को सुस्त व काहिल और पलीद तबीयत उठता है। (बुखारी,मुस्लिम)

घर में दाखिल होते वक्त शैतान से सावधान

हजरत जाबिर रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सललल्लाहो अलैहे व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया "जब आदमी घर में दाखि़ल हो उस वक़्त वह खुदा का ज़िक्र करता है तो शैतान (मायूस होकर) कहता है कि आज यहाँ न रात गुज़र सकती है और न खाना मिल सकता है।" (इब्ने माजा)

घर से निकलते वक्त शैतान से सावधान

हज़रते अबु हुरैरह रदीयल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुजूर ताजदारे मदीना सललल्लाहो अलैहे व सल्लम फ़रमाते है कि "आदमी जब अपने घर के दरवाजे से बाहर निकलता है तो उसके साथ दो फ़रिश्ते मुक़र्रर होते हैं। जब वह आदमी कहता है- "बिस्मिल्लाह" तो वह फरिश्ते कहते हैं तूने सीधी राह इख्तियार की। फिर जब वह कहता है- "ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह" तो फ़रिश्ते कहते है अब तू हर आफत से महफूज़ है। फिर जब वह बन्दा कहता है - "तवक्कुल्तु अलल्लाह" तो फ़रिश्ते कहते हैं अब तुझे किसी और की मदद की हाजत नहीं। इसके बाद उस शख्स पर दो शैतान जो मुसल्लत किये रहते हैं उससे मिलते हैं। यह देख फरिश्ते उनसे कहते हैं अब तुम इसके साथ क्या करना चाहते

हो...? इसने तो सीधा रास्ता इख्तियार किया। तमाम आफत से महफूज़ हो गया और खुदा की इमदाद के अलावा दूसरे की इमदाद से बेनियाज़ हो गया। (इब्ने माजा)

बजने वाली चीज़ के साथ शैतान

हज़रते जुबैर रजियल्लाहु अन्हु कहते है कि उनकी एक आज़ाद करदा लौंडी उनकी लड़की को उमर बिन ख़त्ताब रदीअल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में ले गई। लड़की के पैरों में घुंघरू थे। हज़रत उमर रदीअल्लाहु अन्हु ने इन घुंघरुओं को काट डाला और फरमाया "मैने रसूलल्लाह सललल्लाहो अलैहे व सल्लम को ये फ़रमाते हुए सुना है कि हर बजने वाली चीज़ के साथ शैतान होता है। (अबू दाऊद)

दरवाज़ा बंद करते वक्त सावधान

सोने से पहले घर का दरवाज़ा बन्द कर लेना चाहिये अगर बाहर से आने वाले दरवाज़े ज्यादा हों तो हर एक को अच्छी तरह चैक करें अगर कोई खुला हो तो उसे ज़रूर बंद कर लें। दरवाज़ा खुला रहने से चोर और ग़ैर लोगों के आने का ख़तरा होता है इसलिये दरवाजा बंद करना ज़रूरी है। यही वजह है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शैतान के शर से महफूज़ रहने के लिये सोने से पहले दरवाज़ों को बंद करने की नसीहत फ़रमाई है।(आदाबे सुन्नत,पेज 146)

रात में सावधान रहो

इब्ने अबिद्दुनिया ने अज़्ज़ुहद में और इब्ने अल-फरीस ने फ़ज़ाइलुल-कुरआन में और हमीद बिन नज्वियह ने फज़ाइलुल-आमाल में उबादा बिन साबित से रिवायत की के जब तुम रात को कुरआन पढ़ो तो बुलन्द आवाज़ से पढ़ो क्योंकि उससे शयातीन और सरकश जिन्न भाग जाते हैं और हवा में रहने वाले फरिश्ते नीज़ घर के रहने वाले सुनते हैं, नीज़ जब कोई कुरआन नमाज़ में पढ़ता है तो लोग उसको देख कर नमाज पढ़ते हैं और घर वाले भी पढ़ते हैं। (शरहुससुदूर, पेज 117)

शैतान कान में पेशाब कर देता है

हजरत इब्ने मसऊद रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत है के हुजूर नबीए करीम सल्लल्लाहू ताला अलैहि वसल्लम की खिदमते अक़दस में एक शख़्स का जिक्र किया गया वो सुबह तक सोता रहता है नमाज के लिए भी नहीं उठता तो आपने इरशाद फरमाया वो ऐसा शख़्स है जिसके कानों में शैतान ने पेशाब कर दिया है। (बुखारी, मुस्लिम)

शैतान उस पर हँसता है

हज़रत अबु हुरैरा रदियल्लाहो तआला अन्हु से रिवायत है के रसूलल्लाह सल्लाहु अलैहीवस्सलम ने इरशाद फरमाया छींक अल्लाह तआला की तरफ़ से है और जमाई शैतान की तरफ़ से है जब तुम में से कोई जम्हाई ले तो अपना हाथ मुँह पर रख लिया करे क्योंकि जब आदमी जमाई लेते वक़्त कहता है आह आह। तो शैतान

उस के ऊपर हँसता है और अल्लाह तआला जम्हाई लेते छींक को पसंद करता है और जम्हाई के वक़्त आह आह करता है तो शैतान उसके पेट में हँसता है। (तिर्मिज़ी, बसनदे हसन)

शैतान पेट में घुस जाता है :-

हज़रत अबु सईद रदीअल्लाहु त'आला अन्हु से रिवायत है के रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वस्सलम ने इरशाद फ़रमाया जब तुम में से किसी को जम्हाई आए तो अपना हाथ अपने मुँह पर रख ले क्योंके शैतान जमाई के साथ अंदर घुस जाता है। (मुसनद अहमद, बुख़ारी, मुस्लिम)

नमाज़ में शैतान

मैं (इमाम सुयूती) कहता हूं कि बज़्ज़ार और तबरानी हज़रते अबुल मलीह से रिवायत करते हैं कि एक साहब ने रसूलल्लाहﷺ की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसूलल्लाहﷺ! मैं आपकी ख़िदमत में उस वसवसे की शिकायत अर्ज़ करने हाज़िर हुआ हूं जो मैं अपने दिल में पाता हूं, "मैं जब नमाज़ शुरू करता हूं तो मुझे याद नही रहता कि दो रकअत हुई या एक" तो रसूलल्लाहﷺ ने इरशाद फ़रमाया जब तुम्हे ये सूरत पेश आए तो (नमाज़ से पहले) अपने सीधे हाथ की शहादत की उंगली उठाकर अपनी उल्टे रान में चुभा दो और "बिस्मिल्लाह" पढ़ो इसलिए कि ये कलमा शैतान के लिए छड़ी है।" ।(जिन्नों की दुनिया, इमाम जलालुद्दीन सुयूती)

हज़रते अमर बिन अलआस रदीयल्लाहु अन्हु ने नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ की या रसूलल्लाह! शैतान मेरे और मेरी नमाज़ व किरअत के दरमियान हाइल हो जाता है। आपने फरमाया यह शैतान है जिसे खिनज़ब कहा जाता है, तुम जब भी उसके वसाविस महसूस करो. अल्लाह तआला से उससे पनाह मांगो और तीन मर्तबा बायें जानिब थूक दो, रावी कहते हैं चुनान्चे मैं ने ऐसा ही किया और अल्लाह तआला ने मुझे उससे दूर कर दिया। ।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 79, पेज 458)

शैतान का धंधे के ज़रिये नमाज छुड़वाना

खुदा तआला ने जब नमाज़ का हुक्म नाज़िल किया तो शैतान ने एक दर्दनाक चीख़ मारी, उसकी चीख़ की आवाज़ सुन कर सारा लश्कर उसके पास जम'अ हो गया, शैतान ने परेशानी के आलम में उन से नमाज़ फ़र्ज़ होने का ज़िक्र किया। शैतान ने कहा जहाँ तक तुम से हो सके, लोगों को तुम नमाज़ के औक़ात से रोको और किसी ऐसे धंधे में उन्हें मशगूल रखो जिस से उन्हें नमाज़ पढ़ने की फुरसत ही न मिले, शयातीन बोले और अगर हम से ऐसा न हो सके तो फिर शैतान ने कहा, तो फिर यूँ करो कि जब कोई शख्स नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ा है तो तुम में से चार शैतान गिर्द खड़े हो जाऐं दायें जानिब खड़ा होने वाला यूँ कहे कि ज़रा अपनी दाईं जानिब देख और बाएं तरफ खड़ा होने वाला यूँ कहे कि ज़रा अपनी बाएं जानिब देख ऊपर की तरफ खड़ा होने वाला यूँ कहे जरा ऊपर आसमान की तरफ देख और नीचे की तरफ खड़ा होने वाला उसे नीचे देखने की रगबत दिलाए, और जल्दी जल्दी नमाज़ पढ़ने का वसवसा दिल में डालो

और खूब याद रखो अगर इतनी कोशिश के बावजूद वह बराबर नमाज़ में मशगूल रहा तो हमारा बेड़ा ग़र्क़ हो जाएगा क्योंकि खुदा तआला उसे बख्श देगा। (नुज़्हतुल-मजालिस जि:1 स 66).

गुनाह दौलत के लालच की वजह से

हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि टेक्साल में जब पहला रूपया ढाला गया तो शैतान ने उसको लेकर बोसा दिया और उसको अपनी आँखों पर और नाफ़ पर रखकर कहा कि तेरे ज़रिये से मैं सरकश बनाऊँगा और तेरी बदौलत काफ़िर बनाऊँगा मैं फरजंदे आदम से इस बात से खुश हूँ कि रूपये की मुहब्बत की वजह से मेरी इताअत करता है। (तलबीस इब्लीस 455)

बैतुल खला में शैतान से सावधान

हदीस शरीफ़ आया है, हुजूरे अक़दस ﷺ ने फरमाया उन पाखानों में शैतान होते हैं इसलिए तुम शैतान से अल्लाह की पनाह मांगो और तुम में से हर शख्स बैतुल खला में दाखिल होते वक्त कहे: "अल्लाहुम्मा इन्नी आऊजुबिका मिनल् खुबसि वल् ख़बाइस' तर्जमा: बिस्मिल्लाह मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ खबीस नर और मादा जिन्नात से और पलीद गन्दे फटकारे हुए शैतान से।

वसवसे की बिमारी क्यूँ होती है :-

हदीस : इमाम अबुदाऊद ईमाम तिर्मिज़ी और इमाम निसाई हज़रते अब्दुल्लाह बिन मग़फूल रदीअल्लाहु त'आला अन्हु से रिवायत करते

हैं के रसूलल्लाह सल्लाहु त'आला अलैहि वस्सलम ने इरशाद फ़रमाया तर्जुमा: "तुम में का कोई गुस्लखाने में हरगिज़ पेशाब न करे इस लिए की आमतौर पर वसवसे की बिमारी इसी से पैदा होती है"।(जिन्नों की दुनिया, इमाम जलालुद्दीन सुयुति)

नोट : अटेच लेटरिग बाथरूम बनाना बेहतर नहीं।

शैतान को लाल रंग पसंद है

शैतान को सुर्ख रंग पसंद है: मैं (इमाम सुयुति और बू उदय, इब्न काने, इब्न अस्कन, अबू नईम "अल-मरीफा" और इमाम बैहक़ी "शो'अबुल-ईमान में हज़रत रफ़ी यज़ीद सक़फ़ी से रिवायत करता हैं कि रसूलुल्लाह सलल्लाहो अलैहिस्सलम ने ईरशाद फ़रमाया : शैतान सुर्ख रंग पसंद करता है तुम अपने को सुर्ख रंग से बचाओ और हर किस्म के तकब्बुर पैदा करने वाले लिवास से भी बचाओ। (जिन्नों की दुनिया, इमाम जलालुद्दीन सुयुति)

लाल रंग लिवास वालो को सलाम न करो

हदीस शरीफ: हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फरमाया कि एक आदमी गुज़रा और उसके कपड़े लाल थे। उसने : उसने सलाम किया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे जवाब न दिया। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

लटका हुआ कपड़ा शैतान पहन लेता है-

हज़रते जाबिर रदीयल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहिवस्सलम ने इरशाद फ़रमाया तुम अपने लिबास लपेट कर रखा करो तो उनकी ताकत बाकी और कायम रहेगी इसलिए कि शैतान जब कोई कपड़ा लपेटा हुवा पाता है तो उसको नही पहनता है लेकिन जब वह खुला हुआ पाता है तो शैतान उसको पहन लेता है। (तबरानी औसत)

सदक़ा देने से शैतान रोकता है

इमाम इब्ने जौज़ी रहमतुल्लाहि अलैह तलबीसे इबलीस के सफ़हा 455 पर एक रिवायत दर्ज फ़रमाते हैं कि हम ने शक़ीक़ से रिवायत किया कि अब्दुल्लाह ने कहा शैतान हर उम्दा चीज़ के ज़रिए से इंसान को फ़रेब देता है और कहा कि जब तंग आ जाता है तो उसके माल में लेट जाता है और उसको सदक़ा व खैरात करने से बाज़ रखता है ! मअलूम हुआ कि सदक़ा व खैरात करने वाला शैतान के क़ाबू से बाहर है, और जो शख्स सदका व ख़ैरात का काइल नहीं और खैरात की मदों पर तरह तरह के एअतिराज़ात करता रहता है समझ लीजीए कि उसके माल में शैतान लेटा हुआ है! (शैतान की हिकायत)

रास्तों में शैतान से सावधान

रसूले अरबी सलल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का फरमाने आलीशान है कि - "औरत पर्दे में रहने की चीज़ है जिस वक़्त वह बे पर्दा होकर बाहर निकलती है तो शैतान उसको झांक-झांक कर देखता है।(औरत को देखना शैतानी काम है) (तिर्मिज़ी जि. 1 सफ़ा 140)

शैतान का चौराहा

चार बातों से परहेज किया जाए

1) फ़िज़ूल नज़र (बेकार इधर उधर देखना)

2) फ़िज़ूल गुफ़्तगू

3) फ़िज़ूल खाने (जरूरत से ज़ाइद खाने)

4) लोगो की फ़िज़ूल मुलाक़ात से बाज़ रहना भी शैतान से महफ़ूज़ रहने का ज़रिया है इस लिए के शैतान इन चार दरवाजों से इंसान पर मुसल्लत व हमलावर होता है। (जिन्नों की दुनिया, इमाम जलालुद्दीन सुयूती, पेज 250)

कुरआन सुन कर भाग गए

कुरआने पाक की तिलावत से शैतान भागता है: इब्ने अबिद्दुनिया हज़रते अबू ख़ालिद वाबिली से रिवायत करते है वो फरमाते है में अपने बीवी बच्चों के साथ वफद की सूरत में उमरा के लिए रवाना हुआ तो हम एक मंज़िल पर उतरे और मेरे अहल वो अयाल (परिवार) थे। अचानक मैंने बच्चो का शोर और गुल सुना तो मैंने अपनी आवाज़ कुरआने करीम के साथ ऊंची की तो किसी चीज़ के गिरने की आवाज सुनाई दी। चुनाँचे मैंने उनसे पूछा तो उन्होंने कहा के हमे शैतानों ने पकड़ लिया और हम से खेल कूद करने लगे जब आपने कुरआने पाक के साथ अपनी आवाज बुलंद की तो वो हमे फेंक कर भाग गए।(जिन्नों की दुनिया)

खुशी और गुस्से में शैतान से सावधान

हज़रते खुज़ैमा रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत है, शैतान कहता है: इंसान जब खुश होता है तो मैं आता हूँ और उस के दिल पर मूसल्लत हो जाता हूँ और जब वो गुस्सा करता है तो मैं उड़ कर उसके दिमाग में सवार हो जाता हूँ। (इब्ने अबिददुनिया)

गुस्सा पानी से बुझाओ

हदीस : गुस्सा शैतान की तरफ से है और शैतान आग से पैदा होता है और आग पानी ही से बुझाई जाती है लिहाज़ा जब किसी को गुस्सा आ जाये तो वुजू कर ले । (अबू दाऊद)

हदीस : जब किसी को गुस्सा आये और वह खड़ा हो तो वह बैठ जाये अगर गुस्सा चला जाये तो ठीक वरना लेट जाये। (इसलामी अखलाक ओ- आदाब, 213) (अहमद, तिर्मिज़ी)

नमाज़ और शैतान

इब्ने अबी हातिम, हज़रते जाफ़र बिन मुहम्मद रदीअल्लाहु त'आला अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि मुझे खबर पहुँची है कि मलक उल मौत (हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम) नमाज़ों के वक़्त में लोगों से मुसाफ़ह करते हैं फिर जब वो आदमी को उसकी मौत के वक़्त देखते हैं तो अगर वो नमाज़ की पाबंदी करता था तो उसके क़रीब हो जाते हैं और उससे शैतान को दफ़ा करके "ला इलाहा इल्लाह" की तलक़ीन करते हैं।

पैदाइश के वक्त शैतान

हज़रते अबू हुरैरा रदीअल्लाहु त'आला अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो त'आला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बच्चे की पैदाइश के वक्त चीखना और चिल्लाना बच्चे की कोख में शैतान के उंगली मारने की वजह से है। (मुस्लिम)

जवानी में शैतान से सावधान

शैतान इंसान में कहां कहां होता हैं: अबू बकर मुहम्मद बिन अहमद बिन शैबह "किताबूल कलाइद" में हज़रते इब्ने अब्बास रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि मर्द का शैतान जिस्म में तीन जगह पर रहता है:

(१) उस की आंखों में ,

(२) उस के दिल में ,

(३) और उस के आलए तनासुल (शर्मगाह) में

और औरत का शैतान भी तीन मक़ाम पर रहता है

(१) उस की आंखों में,

(२) उस के दिल में

(३) उस की सुरीन (शर्मगाह) में,

(जिन्नों की दुनिया, इमाम जलालुद्दीन सुयूती)

शैतान और गंदा काम

हिकायत : शहरे सदूम की बस्तियां बहुत आबाद और निहायत सर सब्ज़ो शादाब थी और वहां तरह तरह के अनाज और क़िस्म क़िस्म के फल और मेवे बहुत तादाद में पैदा होते थे। शहर की खुशहाली की वजह से अकषर जा बजा के लोग मेहमान बन कर इन आबादियों में आया करते थे और शहर के लोगों को इन मेहमानों की मेहमान नवाज़ी का बार उठाना पड़ता था। इस लिये इस शहर के लोग मेहमानों की आमद से बहुत ही कबीदा खातिर और तंग हो चुके थे। मगर मेहमानों को रोकने और भगाने की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही थी। इस माहोल में इब्लीसे लईन एक बूढ़े की सूरत में नुमूदार हुवा। और इन लोगों से कहने लगा कि अगर तुम लोग मेहमानों की आमद से नजात चाहते हो तो इस की येह तदबीर है कि जब भी कोई मेहमान तुम्हारी बस्ती में आए तो तुम लोग ज़बरदस्ती उस के साथ बद फे़'ली करो। चुनान्चे, सब से पहले इब्लीस खुद एक खूब सूरत लड़के की शक्ल में मेहमान बन कर इस बस्ती में दाखिल हुवा। और इन लोगों से खूब बद फे' ली। कराई इस तरह येह फे़' ले बद (मर्द मर्द के साथ बदकारी) इन लोगों ने शैतान से सीखा। फिर रफ़्ता रफ़्ता इस बुरे काम के येह लोग इस क़दर आदी बन गए कि औरतों को छोड़ कर मर्दों से अपनी शहवत पूरी करने लगे ।(अजाइबुल कुरआन, पेज 111)

मर्द और औरत के साथ तीसरा शैतान होता है

हदीस:- हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "कोई मर्द

किसी औरत के साथ जब तन्हाई में इकट्ठा होता है तो तीसरा शैतान ज़रूर होता है।" (तिरमिज़ी शरीफ जिल्द 1, पेज 140)

उन औरतों के पास न जाओ

हदीसः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमायाः "जिन औरतों के शौहर मौजूद न हों उनके पास न जाओ क्योंकि शैतान तुम्हारी रगों में खून की तरह दौड़ता है।" (तिरमिज़ी शरीफ़ जिल्द 1, पेज 140)

40 की उम्र के बाद भी तौबा न करने वाला

इब्ने वज्जाह रदीअल्लाहु अन्हु ने एक हदीस नक़ल की है जिसमें कहा गया है जब आदमी चालीस साल को पहुंच जाता है और तौबा नही कर पाता तो शैतान उसके मुंह पर हाथ फेरता और कहता है कि मुझे अपने बाप की क़सम यह उसका चेहरा है जो फलाह नही पाएगा।।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 79, पेज 460)

तन्हाई और शैतान

हिकायत : एक रोज़ शैतान हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास आया, आपने उससे दरयाफ्त फरमाया, भला यह तो बतला वह कौनसा काम है जिस के करने से तू आदमी पर ग़ालिब आ जाता है, उसने जवाब दिया कि ग़ैर महरम औरत के साथ तनहाई में न बैठना, क्यूँकि जब कोई शख्स तनहाई में गैर महरम औरत के साथ बैठता है, तो उनके साथ तीसरा मैं होता हूँ, यहाँ तक कि औरत के साथ

उस को फ़ितने (बदकारी) में डाल देता हूँ। (शैतान की हिकायत, पेज 38)

तन्हाई में शैतान से सावधान

मुश्त ज़नी यानी हस्तमैथुन हराम है

फतावा रज़विया जिल्द 22 में है:

मस्अला 58: अज़ गिलगित छावनी, जुइनाल मुर्सल सय्यद मुहम्मद यूसुफ अली साहब, शअबान 1312 हिजरी क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन व मुफ्तियाने शरअ मतीन इस मस्अला में कि जलख़ (हस्तमैथुन) लगाने का अल्लाह पाक क्या गुनाह फरमाता है? (बयान फरमाएं, अज्र पाएं) अल-जवाब: यह फ़ेअल (काम) नापाक हराम व नाजाइज़ है। अल्लाह जल्ल व उला ने इस हाजत के पूरा करने को सिर्फ ज़ौजा (बीवी) व कनीज़े शरई बताई है और साफ़ इरशाद फरमा दिया है कि : जो इसके सिवा और कोई तरीका ढूंडे तो वही लोग हैं हद से बढ़ने वाले। (कुरआनुल करीम 7 / 31)

हदीस में है: तर्जमा: जल्क़(हस्तमैथुन) लगाने वाले पर अल्लाह त'आला की ल'अनत है ।

निकाह के बाद शैतान से सावधान

मियाँ बीवी का झगड़ा: हज़रते जाबिर रदीअल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि मैंने रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम को इरशाद फरमाते हुए सुना है कि इब्लीश समंदर पर अपना तख्त बिछाता है

और उस पर बैठ कर अपनी फौजों को लोगों में फितना डालने के लिये भेजता है शैतान के इस गिरोह में मंज़िलत के एतबार से इब्लीस के सब से ज्यादा करीब वो शैतान होता हैं जो इंतेहा दर्जा का(बड़ा) फितना परवर (फितना बरपा करने वाला) हो उन में से एक शैतान आकर अपने सरदार से कहता है के मेंने ऐसा ऐसा फितना फैलाया सरदार (इब्लीस) कहता है तूने कुछ नही किया। फिर उन में से एक दूसरा शैतान आकर कहता है के मेंने फला शख्स का उस वक्त तक पीछा ना छोड़ा जब तक मैंने उसमें और उसकी बीवी में जुदाई न डाल दी। (हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं) इब्लीस उस को अपने करीब करके कहता है ये तूने बहूत ही अच्छा काम किया (आमश फरमाते है मुझे खयाल आता है के हज़रते जाबिर रदीअल्लाहु अन्हु ने फरमाया शैतान उसे गले से लगा लेता है। (मुसनद अहमद, मुस्लिम किताबुल मुनाफिक़ीन)

लोगो के बीच शैतान से सावधान

इंसानो में शैतान की हरकत से लड़ाई होती है:- इब्ने अबिद्दुनिया और अबू नोएम हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमरो रदीअल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते है, वो फ़रमाते हैं कि शैतान सबसे निचली(सातवीं) ज़मीन में मुक़य्यद है, जब वो हरकत करता है तो ज़मीन पर जिन दो या दो से दो से ज़ाएद आदमियों के दरमियान लड़ाई झगड़े होते हैं वो इसी हरकत की वजह से होते हैं। (जिन्नों की दुनिया, इमाम जलालुद्दीन सुयुति)

ज़ाकिर पर शैतान का कामयाबी :-

इमाम अहमद अज़्ज़ुहद में हज़रते इब्ने मसऊद रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं फ़रमाते हैं कि शैतान ज़िक्र की मजलिस करने वालों को फ़ितने में मुब्तला करने के लिए चक्कर देता है। जब उनमें तफ़रीक़ करने में कामयाब नहीं होता तो उस मजलिस में जाता है जो लोग दुनियाँ का ज़िक्र कर रहे होते हैं उनको एक दूसरे के ख़िलाफ़ उकसाता है यहाँ तक कि वो आपस मे लड़ना शुरू कर देते हैं तो अल्लाह का ज़िक्र करने वाले उनके दरमियान में आकर लड़ने से रोकते हैं। इस तरह शैतान ज़िक्र करने वालों को मुन्तशिर कर देता है।(जिन्नों की दुनिया)

सफ़र में शैतान से सावधान

बिस्मिल्लाह न पढ़ी तो शैतान सफ़र का साथी बन जाता है: हज़रते इब्ने अब्बास रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल सल्लल्लाहु त'आला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया: जब कोई बंदा सवारी पर सवार होता है और अल्लाह का नाम नहीं लेता यानी बिस्मिल्लाह नही पढ़ता तो शैतान उसके पीछे बैठ जाता है ,यानी उसके सफ़र का साथी हो जाता है और उसको कहता हैं कुछ गाना गाओ जो वो अच्छी तरह नहीं गा पाता तो उससे कहता है कोई आरजू करो चुनांचे वो आरजू में ही लगा रहता है हत्ता के सवारी से उतर जाता है। (दैल्मी)

मौत के वक्त शैतान से सावधान

हिकायत : ज़करिया नाम का एक मशहूर ज़ाहिद गुज़रा है, सख़्त बीमारी के बाद जब उस की रूह कब्ज़ होने का वक्त आया तो उस के दोस्त ने उसे कलिमा की तलकीन की, मगर उसने दूसरी तरफ मुँह फेर लिया। दोस्त ने दूसरी मर्तबा तलकीन की लेकिन उस ने इधर से उधर मुँह फेर लिया। जब उसने तीसरी मर्तबा तलक़ीन की तो उस ज़ाहिद ने कहा, मैं नही कहता, दोस्त यह सुनते ही बेहोश हो गया। कुछ देर बाद जब ज़ाहिद को कुछ इफ़ाक़ा हुआ, उस ने आँखें खोली और पूछा तुम ने मुझ से कुछ कहा था? उन्हों ने कहा हाँ, मैं ने तुम को कलिमा की तलक़ीन की थी मगर तुमने दो मर्तबा मुँह फेर लिया और तीसरी मर्तबा कहा "मैं नही कहता" ज़ाहिद ने कहा बात यह है कि मेरे पास शैतान पानी का प्याला लेकर आया और दायें तरफ़ खड़ा होकर मुझे वह पानी दिखाते हुए कहने लगा तुम्हें पानी की ज़रूरत है? मैं ने कहा हाँ! कहने लगा कहो ईसा अल्लाह के बेटे हैं। मैं ने मुँह फेर लिया तो दूसरी तरफ से आकर कहने लगा, मैं ने फिर मुँह फेर लिया। जब उस ने तीसरी मर्तबा ईसा अल्लाह के बेटे हैं" कहने को कहा तो मैं ने कहा, मैं नही कहता, इस पर वह पानी का प्याला ज़मीन पर पटक कर भाग गया। मैं ने तो यह लफ़्ज़ शैतान से कहे थे, तुम से तो नही कहे थे और फिर कलिमए शहादत का जिक्र करने लगा। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 16 , पेज 120)

शैतान की नांक

हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से मरवी है कि किसी ने अल्लाह

तआला से सवाल किया मुझे इन्सानी दिल में शैतान की जगह दिखा दे, ख़्वाब में उस ने शीशे की तरह साफ़ सुथरा एक इन्सानी जिस्म देखा जो अन्दर बाहर से एक जैसा नज़र आ रहा था। शैतान को देखा वह उस इन्सान के बायें कंधे और कान के दमियान बैठा हुआ था और अपनी लम्बी नाक से उस के दिल में वसवसे डाल रहा था। जब वह इन्सान अल्लाह का ज़िक्र करता तो वह फौरन ही पीछे हट जाता। ऐ रब्बे जुलजलाल! ख़त्मुल मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तुफैल हमें शैताने मरदूद के वसवसे से बचा, हमें हासिद ज़बान से नजात बख़्श और अपने ज़िक्र व शुक्र की तौफीक़ इनायत फ़रमा (आमीन बिजाहे सय्येदिल मुरसलीन) (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 16, पेज 120)

दिल मे फ़रिश्ता या शैतान....

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया दिल में उतरने की दो जगहें हैं, एक जगह फरिश्ते के उतरने की वह है जो नेकी पर तम्बीह करती है और हक़ की तस्दीग़ की जानिब रगबत दिलाती है लिहाज़ा जो आदमी अपने अन्दर यह बात महसूस करे वह उसे अल्लाह तआला की रहमत समझे और खुदावन्द जल्ल व आ'ला की तारीफ व तौसीफ करे, दूसरी जगह दुश्मन की है जो फितना व फसाद की जानिब मैलान पैदा करता, हक़ की तकज़ीब (झुटलाना) और नेकियों से मना करता है, जो शख्स अपने दिल में यह बात महसूस करे वह अल्लाह तआला से शैताने रजीम की शरारतों से पनाह मांगे, फिर आपने यह आयत तिलावत फरमाई "शैतान तुम्हें फ़क्र का वादा देता है और बुरे काम करने का हुक्म

देता है"। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 79, पेज 458

दिल की दो फ़िकरें

जनाब हसन बसरी रदीअल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि दो फ़िकरें हैं जो इंसान के दिल में गर्दिश करती रहती हैं, एक हक़ की फिक्र और दूसरी दुश्मनी की फिक्र होती है। अल्लाह त'आला उस बन्दे पर रहम करे जो अपने अज़ाइम का क़स्द करता है, जो काम उसे अल्लाह तआला की तरफ से नज़र आता है उसे पूरा करता है और जो उसे दुश्मन की तरफ से नजर आता है उसे छोड़ देता है।।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 79, पेज 458)

उस दिल में शैतान नहीं रहता

जनाब जाबिर दिन उबैदा अदवी कहते हैं, मैंने जनाब अला बिन ज़ियाद से अपने दिल में पैदा होने वाले वसवसों की शिकायत की तो उन्होंने उसे फ़रमाया, दिल की मिसाल उस घर जैसी है जिस में चोरों का गुज़र होता है, अगर उसमें कुछ मौजूद होता है तो वह उसे निकाल ले जाने के बारे में सोचते हैं वरना उसे छोड़ देते हैं यानी जो दिल ख्वाहिशात से खाली होता है उसमें शैतान दाखि़ल नही होता, इसी लिए फरमाने इलाही है 'बेशक मेरे बन्दों पर तेरे लिए कोई ग़लबा नही'।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 79, पेज 458)

ख़्वाहिशात का पैरोकार किसका बंदा

वह इंसान जो ख्वाहिशात की पैरवी करता है वह अल्लाह का नही,

बल्कि शहवत का बन्दा है इसी लिए अल्लाह त'आला उस पर शैतान को मुसल्लत कर देता है, इरशादे इलाही है :"क्या तूने उसको नही देखा जिसने अपनी ख्वाहिश को मअबूद बना लिया"। इस आयत में इस अमर की जानिब इशारा है कि जिसका मअबूद और खुदा उसकी ख्वाहिश हो वह अल्लाह का बन्दा नही होता।।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 79, पेज 458)

वज़ू के वक्त शैतान से सावधान

हदीस शरीफ में है वज़ू में नुक्स पैदा करने के लिए एक शैतान है जिसका नाम वलहान है, अल्लाह तआला की रहमत से उससे बचने का सवाल करो।(जिन्नों की दुनिया, इमाम जलालुद्दीन सुयुति)

शैतानी वसवसों से सावधान

दिल से शैतानी वसवसे इस सूरत में दूर हो सकते हैं कि इंसान उन वसवसों के खिलाफ बातें सोंचे यानी ज़िक्रे इलाही करे क्योंकि दिल में किसी चीज़ का ख्याल आता है तो पहले वाली चीज़ का ख़याल मिट जाता है लेकिन हर उस चीज़ का ख़याल जो ज़ाते रब्बानी और उसके फ़रामीन के इलावा हो, शैतान की जौलानगाह बन सकती है मगर जिक्रे खुदा ऐसी चीज़ है जिसकी वजह से मोमिन का दिल मुतमइन हो जाता है और वह जान लेता है कि शैतान की ताकत नही जो उसमें ज़ोर आज़माई करे, चूंकि हर चीज़ का इलाज उसकी ज़िद से किया जाता है, लिहाजा जान लीजिये कि तमाम शैतानी वसवसों की ज़िद जिक्रे इलाही है, शैतान से पनाह चाहना है और

"ला-हौला-वला-कुव्वता-इल्ला-बिल्लाह" से रिहाई पाना है और तुम्हारे इस क़ौल का कि मैं अल्लाह से शैताने रजीम से पनाह मांगता हूं और"ला-हौला-वला-कुव्वता-इल्ला-बिल्लाहिल-अलिय्यिल -अज़ीम" की यही मन्शा है, इस मक़ाम पर वही लोग सरफ़राज़ होते हैं जो मुत्तक़ी हों और ज़िक्रे खुदा जिन की रग-रग में रच बस गया हो और शैतान ऐसे लोगों पर बे-ख़बरी के आलम में अचानक हमले किया करता है, फ़रमाने इलाही है "तहकीक वह लोग जो परहेज़गार हैं जब उनको शैतान की तरफ से वसवसा लगता है तो वह ज़िक्र करते हैं फिर अचानक वह देखने लगते हैं"। मुजाहिद रदीअल्लाहु अन्हु इस फरमाने इलाही 'खन्नास के वसवसों के शर से" की तफ़सीर में कहते हैं कि वह दिल पर फैला हुआ होता है, जब इंसान ज़िक्रे खुदा करता है तो वह पीछे हट जाता है और सिकुड़ जाता है और जब इंसान ज़िक्र से गाफिल होता है तो वह हस्बे साबिक़ दिल पर तसल्लुत जमा लेता है।।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 79, पेज 459)

शैतान से मुक़ाबला

ज़िक्रे इलाही और शैतान के वसवसों का मुकाबला ऐसे है जैसे नूर और जुलमत, रात और दिन, और जिस तरह यह एक दूसरे की ज़िद हैं चुनान्चे फरमाने इलाही है "उन पर शैतान ग़ालिब आया और उन्हें यादे इलाही से ग़ाफिल कर दिया"।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 79, पेज 459)

शैतान इंसान के दिल को निगल लेता है

हज़रते अनस रदीअल्लाहु अन्हु से मरवी है, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि शैतान इंसान के दिल पर अपनी ताक लगाये हुए, जब इंसान अल्लाह तआला को याद करता है तो वह पीछे हट जाता है और जब वह यादे इलाही से ग़ाफिल हो जाता है तो शैतान उसके दिल को निगल लेता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 79, पेज 459)

भूख से शैतानी रास्ता रोक लो

इंसानी ख्वाहिशात व शहवात इंसान के खून और गोश्त पोस्त से जुदा नही होती, उसी तरह शैतान की सल्तनत भी इंसानी दिल पर मुहीत है और इंसान के खून और गोश्त व पोस्त पर जारी व सारी है चुनान्चे फरमाने नबवी है शैतान इंसान के वजूद में खून की तरह गर्दिश करता है लिहाज़ा उसकी गुज़रगाहों को भूक से बन्द करो, आपने भूक का ज़िक्र इस लिए फ़रमाया है कि शहवत को ख़त्म कर देती है और शैतान के रास्ते भी शहवात हैं।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 79, पेज 460)

शहवाते नफ़सानी के दिल का घेराव करने के मुत'अल्लिक इरशादे इलाही है जिस में शैतान के क़ौल की ख़बर दी गई है कि उसने कहा "फिर अलबत्ता मैं उनके पास उनके आगे से, उनके पीछे से, उनके दायें से और उनके बाईं तरफ से आऊंगा" इससे पहले वाली आयत में है कि शैतान ने कहा कि "मैं अलबत्ता तेरी सीधी राह पर उनके

लिए बैठूंगा।" ।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 79, पेज 460)

इस्लाम, हिजरत और जिहाद मे शैतानी रुकावट

फ़रमाने नबवी है कि शैतान इंसान के रास्तों पर बैठ गया, उसके इस्लाम के रास्ते में बैठकर उससे कहा: क्या तू इस्लाम क़बूल करता है और अपने और अपने बाप दादा के दीन को छोड़ता है मगर इस इंसान ने उसका कहा मानने से इंकार कर दिया और इस्लाम ले आया। फिर वह हिजरत के रास्ता में बैठ गया और बोला क्या तू हिजरत करता है और अपने वतन को और उसकी ज़मीन व आसमान को छोड़ता है? मगर उस इंसान ने उसकी बात मानने से इंकार कर दिया और हिजरत कर गया फिर उसके जिहाद के रास्ता में बैठ कर बोला क्या तू जिहाद करना चाहता है, हालांकि उसमें जान व माल का ज़ाया (खर्च बेसूद) है, जब तू जंग में जाएगा तो क़त्ल हो जाएगा और तेरी औरतों से लोग निकाह कर लेंगे, तेरा माल आपस में बांट लेंगे मगर उस बन्दए खुदा ने शैतान की बात मानने से इनकार कर दिया और जिहाद में शरीक हुआ और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस किसी ने ऐसे किरदार का मुज़ाहिरा किया, फिर उसे मौत आ गई तो अल्लाह त'आला पर वाजिब होगा कि वह उसे जन्नत में दाख़िल करे।।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 79, पेज 460)

तक़वा और परहेजगारी में शैतान से निजात

जिस तरह मीठी चीज़ को चींटियों की फ़ौज खा लेती है उसी तरह

ईमान को शैतान की फ़ौज छीन लेती है इसलिए ईमान को तक़वा और परहेजगारी के साथ बचाओ। फ़ितनों के इस दौर में शैतान का जाल पूरी तरह फैल चुका है, इस जाल से सिर्फ़ परहेज़गार बन्दा ही निकल सकता है। (मुसन्निफ़)

गुनाह शैतान कराता है

कुरआन : क़सम है मैं (शैतान) ज़रूर उन्हें (इंसानो को) बहकादुंगा और ज़रूर उन्हें आरजुऐं दिलाऊंगा और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वो चौपायों के कान चीरेंगे और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वो अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ें बदल देंगे और जो अल्लाह को छोड़कर शैतान को दोस्त बनाये वह सलीम टोटे में पड़ा (सुरह: निसा, आयात न. 119)

परहेज़गारी सीधा रास्ता है

कुरआन : यह (परहेजगारी) है मेरा सीधा रास्ता तो इस पर चलो, और दुसरी राहें न चलो कि तुम्हें उसकी राह से जुदा कर देंगी यह तुम्हें हुक्म फ़रमाया कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले। (सूरह अनाम, आयत न 153)

अपने रास्तों पर बुलाता है

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदीअल्लाहु अन्हु कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे सामने एक लकीर खींची और फ़रमाया यह अल्लाह का रास्ता है, फिर आपने उस लकीर के दायें बायें कुछ और लकीरें खींची और फरमाया यह शैतान के रास्ते हैं

जिन के लिए वह लोगों को बुलाता रहता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 16, पेज 107)

शैतान के 4 खास रास्ते

खुदा तआला ने शैतान को जब अपनी बारगाह से निकाल दिया और उसे मरदूद व मलऊन कर दिया तो शैतान ने खुदा से कहा कि मुझे क्यामत तक के लिए मुहलत दे, खुदा ने फरमाया अच्छा मैंने मुहलत दी, शैतान ने मुहलत मिलने का व'अदा लेकर फिर क़सम खाकर कहा कि मैं सीधे रास्ते पर बैठ जाउँगा तेरे बंदों (आदम की औलाद) को चारों तरफ से घेर लूँगा, इस तरह उन पर सामने से भी हमला कर दूँगा, पीछे से भी, और उन के दाहिने और उन के बाएं से भी उन पर हमला आवर होंगा, और उन्हें तेरे शुक्र गुज़ार बन्दे न रहने दूँगा। खुदा तआला ने फरमाया, मलऊन तू यहाँ से निकल जा! और जा लोगों को बहका, मेरा भी यह एलान है जो तेरे कहे पर चला मैं उसे भी तेरे साथ जहन्नम में दाख़िल करूँगा। (कुरअन पारा 8, रू. 6)

ग़ौर व फ़िक्र : मेरे(मुसन्निफ के) इल्म के मुताबिक़ शैतान ने जो चारों तरफ से हमलावार होने की बात कही उसमें एक तरफ दौलत है जिसका लालच देकर मुसलमानों को दीन से दूर करता है , दूसरी औरत है जिसके ज़रिए शैतान मर्दो को गुनाह कराने में कामयाब रहा है खासकर बदकारी , तीसरी शोहरत यानी खुद को बेहतर समझना या दिखावा है जिसके ज़रिए मुसलमानों को सुन्नत से दूर कर दिया है और चौथी ख़्वाहिशात यानी लंबी उम्मीदे हैं जिनकी

वजह से मुसलमान मौत, आाखिरत और अल्लाह को भूल बैठा है ।

वसवसों का दरवाज़ा:

इमाम सुयूती इब्ने अबिददुनिया हज़रत यहया बिन अबी काशिर से रिवायत करते हैं, वो फरमाते हैं के इंसान के सीने(दिल) में वसवसे का एक दरवाज़ा है जिससे (शैतान) वसवसा डालता है।(जिन्नों की दुनिया , हदीस 270)

इन्सान के दिल में शैतान का घर

खुदा त'आला ने शैतान को हज़रते आदम अलैहिस्सलाम की ख़ातिर जब अपनी बारगाह से निकाल दिया तो शैतान ने खुदा से दरख्वास्त की कि इलाही तूने मुझे मरदूद तो कर ही डाला है अब इतना कर कि मुझे आदम की औलाद पर पूरी कुदरत और क़ाबू दे दे, ताकि उन्हें मैं गुमराह कर सकूँ। खुदा ने फ़रमाया जा तू उन पर काबू याफ़ता है और मैंने तुझे उन पर कुदरत दे दी। कहने लगा, इलाही! कुछ और ज़्यादा कर फ़रमाया तू उन के मालों में शिरकत करले, य'अनी फ़िज़ूलखर्ची करवा सकेगा। कहने लगा कुछ और ज़्यादा कर, फरमायां जा उनके दिल तेरे रहने के घर होंगे! (नुज़हतुल मजालिस, जिल्द 2, पेज 31-32)

वोह शैतान के भाई हैं

अल्लाह फरमाता है : बेशक उड़ाने (फिजूलखर्ची) वाले शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है (सुरह: बनी

इस्राईल, आयत न.27)

शैतान का साथी कौन

अल्लाह फरमाता है : जिसे रतौंद (भुलना) आए रहमान के ज़िक्र से हम उस पर एक शैतान तैनात करें कि वह उसका साथी रहे। (सुरह: जुखरूफ़, आयत न. 36)

शैतान का सर दिल के ऊपर

सईद बिन मंसूर और अबू बकर बिन अबी दाऊ़द "ज़िम्मुल वसवसा" में हज़रत अ़रवह बिन रुवैम से रिवायत करते हैं के हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्लाम ने अपने परवरदिगार की बारगाह में अर्ज़ की के उन (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) को इन्सानों में शैतान के रहने की जगह दिखाए। चुनांचे अल्लाह ताअ़ला ने उन पर ज़ाहिर फरमा दिया तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने देखा कि शैतान का सर सांप के सिर की तरह है जिसने अपना सिर दिल के दहाने पर रखा हुआ है जब इंसान अल्लाह ताअ़ला का ज़िक्र करता है तो ये अपना सिर हटा लेता है और जब बंदा अल्लाह का ज़िक्र करना छोड़ देता है तो शैतान उसे आज़माता है और वसवसे डालने लगता है याअ़नी उसकी तरफ वापिस आ कर वसवसे डालता है।(जिन्नों की दुनिया, इमाम जलालुद्दीन सुयुति)

शैतान चुपके चुपके बातें करता हैं

इब्ने अबीददुनिया "मकाईदुश्शशै़तान" में और अबु याअ़ला और

बैहक़ी "शो'बुल ईमान" में हज़रत अनस रदीअल्लाहु अन्ह से रिवायत करते हैं वो फरमाते हैं के नबीए करीमﷺ ने इरशाद फ़रमाया: (तर्जमा) बेशक़ शैतान ने अपनी सूंढ़ इंसान के दिल पर रखी हुई है जब आदमी अल्लाह ताअ़ला का ज़िक्र करता है तो वो पीछे हट जाता है और जब अल्लाह को भूल जाता है तो शैतान उसके दिल में चुपके चुपके बातें करता है।(जिन्नों की दुनिया, इमाम जलालुद्दीन सुयुति)

वो दो चीज़ें शैतान को झूठा नहीं करती

रिवायत है कि जब हजरते नूह अलैहिस्सलाम ने खुदा के हुक्म से पहले हर जिन्स का एक-एक जोड़ा कश्ती में सवार किया और खुद भी सवार हुये तो आपने एक अजनबी बूढ़े को देख कर पूछा, तुम्हें किस ने कश्ती में सवार किया है? उस ने कहा, मैं इसलिए आया हूं कि आप के साथियों के दिलों पर कब्जा कर लूँ, उस वक्त उन के दिल मेरे साथ और बदन आप के साथ होंगे।

हजरते नूह अलैहिस्सलाम ने फरमाया ऐ अल्लाह के दुश्मन! ऐ मलऊन निकल जा इबलीस बोला ऐ नूह! पाँच चीजें ऐसी है जिन से मैं लोगों को गुमराही में डालता हूँ, तीन तुम्हे बतलाऊँगा और दो नही बतलाऊँगा। अल्लाह तआला ने हजरते नूह अलैहिस्सलाम की तरफ वही की, आप कहें कि मुझे तीन से आगाही की जरूरत नही तू मुझे सिर्फ वही दो बतला दे। शैतान बोला, वह दो ऐसी है जो मुझे कभी झूटा नही करती और न ही कभी नाकाम लौटाती हैं और उनहीं से मैं लोगों को तबाही के दहाने पर ला खड़ा करता हूं। उन मे से एक

हसद (जलन) है और दूसरी हिर्स (लालच) है। इसी हसद की वजह से तो मैं रांदए बारगाह और मलऊन हुआ हूँ और हिर्स के सबब आदम अलैहिस्सलाम को ममनूआ चीज़ की ख्वाहिश पैदा हुई और मेरी आरजू पूरी हो गई।

कुरआन का असर :-

हदीस : हज़रत क़ैस बिन हज्जाज ने कहा, मेरे शैतान ने मुझसे कहा कि जब मैं तेरे अंदर दाखिल हुआ था तो जड़ की तरह था , लेकिन आज मेरी हालत गोरी की मांनिन्द है, मैं ने कहा यह क्यों? शैतान ने कहा तूने मुझे किताबुल्लाह के ज़रिये पिघला दिया है।

कुरआन से शैतान भागता है

हदीस : हज़रते अबू खालिद वाबिली से मरवी है, उन्होंने फरमाया: मैं एक वफ्द के साथ हज़रते उमर रदिअल्लाहु अन्हु के पास गया, उस वक्त मेरी बीवी मेरे साथ थी, हम एक जगह उतरे, मेरी बीवी मेरे पीछे थी। मैंने कुछ बच्चों की चीख ओ पुकार सुनी तो बलन्द आवाज़ से कुरान पढ़ना शुरू कर दिया फिर मेंने कुछ छूटने जैसी आवाज़ सुनी (वो लडक़े मेरे पास आए)। मैंने उनसे उनके बारे में पूछा, तो उन्होंने जवाब दिया कि हमको शयातीन ने पकड़ लिया था और वो हमारे साथ लग्व ओ लइब कर रहे थे जब आपने बलन्द आवाज़ से कुरान पाक पढ़ा तो वो लोग हमें छोड़ कर भाग गए। (मकाइदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)

अल्लाह के ज़िक्र से शैतान भागता है

हदीस : शैतान और इंसान का दिल:हज़रते अनस बिन मालिक रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने कहा कि आक़ा करीम ﷺ ने इरशाद फरमाया: यक़ीनन शैतान अपनी नाक इंसान के दिल पर रखे हुए है, तो जब बंदा ए मोमिन अल्लाह का ज़िक्र करता है तो शैतान भाग जाता है और जब इंसान अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो जाता है तो शैतान उसके दिल मे वसवसा डालने लगता है। (मकाइदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)

ला इलाहा इल्लल्लाह' दिल से शैतान को भगा देता है:

हदीस : हज़रते उमरो बिन मालिक नकरी कहते हैं मैंने अबू जौज़ह को कहते सुना: क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़ा ए कुदरत में मेरी जान है, यक़ीनन शैतान दिलों से चिमटा हुआ है, शैतानी सोच वाला अल्लाह तआला के ज़िक्र की ताक़त नही रखता, क्या तुम बाज़ारों और मजलिसों में नही देखते कि शैतान तक़रीबन हर दिन उन में से किसी के पास आता है फिर वो ज़िक्रे इलाही से ग़ाफ़िल हो जाता है, शैतान को दिल से सिर्फ "ला इलाहा इल्लल्लाह" ही दूर कर सकता है। फिर इस आयते करीमा की तिलावत की: "और जब तुम कुरान में अपने अकेले रब की याद करते हो तो वो पीठ फेर कर भागते हैं, नफरत करते" (मकाइदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)

क़ारून के साथ शैतान का मक्रो फ़रेब:

हदीस: हज़रते अहमद बिन अबु हवारी कहते हैं, मैंने अबु सुलैमान और उन के सिवा दूसरों से सुना, उन्होंने कहा: क़ारून के सामने

इब्लीस ज़ाहिर हुआ, रावी कहते हैं: क़ारून एक पहाड़ पर चालीस साल तक इबादत में मशगूल रहा यहां तक कि इबादत के मामले में वो बनी इसराइल में मुमताज़ हो गया। रावी कहते हैं: इब्लीस ने क़ारून के पास अपने चंद शयातीन को भेजा लेकिन वो उस पर कुदरत न पा सके, तो वो बज़ाते खुद क़ारून के पास आया और उसके साथ इबादत करने लगा, क़ारून कभी-कभी खाता पीता लेकिन ये कुछ न खाता पीता, और वो क़ारून की कुव्वत से ज़्यादा इबादत व रियाज़त करता, रावी कहते हैं: क़ारून इब्लीस के सामने झुक गया, तो इब्लीस ने उस से कहा: ऐ क़ारून! मैं इससे राज़ी हुआ, तू बनी इसराइल के जनाज़े और जमात में हाज़िर न हो, रावी ने कहा: फिर इब्लीस ने क़ारून को पहाड़ पर शब बेदारी से रोका, यहां तक कि उसको गिरजा घर मे दाख़िल कर दिया, रावी कहते हैं: बनु इस्राइल के लोग उनके पास खाने पीने की चीज़ें ले जाते, एक मर्तबा इब्लीस ने क़ारून से कहा: ऐ क़ारून! अगर हम इससे राज़ी हैं तो हम बनु इसराइल पर बोझ बन गए हैं, क़ारून ने कहा: तो फिर बेहतर क्या होगा?, उसने कहा: हम एक दिन कमाएँ और जुमा तक इबादत करें, क़ारून ने कहा: ठीक है। फिर इब्लीस ने उस से कहा: हम इससे राज़ी हो गए कि ना हम सदक़ा करेंगे और ना ही कोई काम करेंगे, तो क़ारून ने कहा: तो बेहतर क्या होगा? इब्लीस कहने लगा: हम एक दिन इबादत करें और एक दिन कमाएँ, क़ारून ने इस तरह करना शुरू किया और इब्लीस उसे छोड़कर भाग गया, और क़ारून पर दुनियां ग़ालिब आ गयी। (यानी दौलत के लालच में मुबतला हो गया) (मकाइदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)

शैतान और फ़िरऔन

हिकायत : एक रोज़ शैतान ने फिरऔन से कहा देख मैं तुझ से उम्र में बड़ा हूँ लेकिन मैंने रबूबियत का दवा आज तक नहीं किया, तू किस तरह करता है, फ़िरऔन ने कहा तू सच कहता है, मैं तौबा करता हूँ, शैतान ने कहा, न, न, ! ऐसा हरगिज़ न करना, सारा मिस्र तुम्हारी रबूबियत का क़ाइल हो गया है, अब अगर तुमने यह कह दिया कि मैं खुदा नहीं तो कितनी ज़िल्लत की बात है चुनाँचे फिरऔन फिर अपने दअवे पर डट गया। (नुज़हतुल-मजालिस जि:1 स. 176)

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैह अपनी किताब मुकाश्फतुल कुलूब में लिखतें है :

इन्सान का दिल एक किला है

इन्सानी क़ल्ब की मिसाल एक किले जैसी है और शैतान एक दुश्मन है जो किले पर हमला करके उस पर क़ब्ज़ा जमाना चाहता है, किले की हिफाज़त दरवाज़ों को बन्द किये बग़ैर और तमाम रास्तों और सुराखों की निगरानी के बग़ैर नामुमकिन है और यह फ़रीज़ा वही सर अंजाम (पूरा करना) दे सकता है जो उन रास्तों से अच्छी तरह वाकिफ़ हो। लिहाजा दिल को शैतानी वसवसों के हमले से महफूज़ रखना हर अक्लमन्द के लिए ज़रूरी ही नहीं बल्कि एक फ़र्ज़े ऐन है, चूँकि शैतान के हमले का मुक़ाबला उस वक्त तक नामुमकिन है, जब तक उस के तमाम रास्तों की जानकारी न हो। लिहाज़ा उन रास्तों

की जानकारी सबसे पहली ज़रूरत है और यह रास्ते इन्सान ही के पैदा किये हुए होते हैं, जैसे गुस्सा, शहवत क्योंकि गुस्सा अक़्ल को खत्म कर देता है लिहाज़ा जब अक़्ल कम हो जाती है तो शैतानी लश्कर इन्सान पर ज़बरदस्त हमला कर देता है, जैसे ही इन्सान ग़ज़बनाक होता है, शैतान उस से ऐसे खेलता है जैसे बच्चा गेंद से खेलता है।

एक बन्दए खुदा ने शैतान से पूछा, यह बतला तू इन्सान पर कैसे क़ाबू पा लेता है?

शैतान ने कहा मैं उसे गुस्से और उस की शहवत के वक्त ज़ेर करता हूँ। शैतान के रास्तों में एक रास्ता हिर्स (लालच) और हसद का भी है क्यों कि हिर्स इन्सान को अंधा और बहरा कर देती है। लिहाज़ा शैतान उस फुर्सत को ग़नीमत समझते हुए तमाम बुराईयो को हिर्स के सामने बेहतरीन अन्दाज में पेश करता है और वह उसे खूबियाँ समझ कर क़बूल करता चला जाता है।

हलाल खाना भी शैतान का हथियार है

शैतान का एक रास्ता इन्सान का पेट भरा होना है अगरचे यह हलाल रोज़ी से ही भरा गया हो क्योंकि पेट का भर जाना शहवतों (ख्वाहिशों) को उभारा करता है और शैतान का यही हथियार है।

हिकायत : रिवायत है कि हज़रते यहया अलैहिस्सलाम ने एक बार शैतान को देखा वह बहुत से फन्दे उठाये हुए था आप ने पूछा: यह क्या है? शैतान ने जवाब दिया यह वह फन्दे हैं जिन से में इन्सान को

फांसता हूँ। आपने पूछा, कभी मुझ पर भी तूने फन्दा डाला है? शैतान ने कहा- आप जब भी पेट भर खा लेते हैं मै आप को ज़िक्र व नमाज़ से सुस्त कर देता हूँ। आप ने पूछा और कुछ? कहा बस तब आपने क़सम खाई कि मैं आइन्दा कभी पेट भर कर नही खाऊँगा। शैतान ने भी जवाब में क़सम खाई कि मैं भी आइन्दा किसी मुसलमान को नसीहत नही करूंगा।

शैतान का एक रास्ता माल व सामाने दुनिया पर दीवानगी है क्यों कि शैतान जब इन्सान का दिल इन चीजों की तरफ माइल देखता है तो उन्हें और ज्यादा खूबसूरत अन्दाज़ में उस के सामने पेश करता है और इन्सान को हमेशा मकानों की तामीर छत व दरवाजा की आराइश व ज़ीबाइश (सजावट) में उलझाये रखता है और उसे खूबसूरत लिबास, अच्छी-अच्छी सवारियों और लम्बी उम्र की झूटी उम्मीदों में मुब्तला कर देता है और जब कोई इन्सान इस मंजिल पर पहुँच जाता है तो फिर उस की राहे खुदा पर वापसी दुशवार और मुश्किल हो जाती है, क्यों कि वह एक उम्मीद के बाद दूसरी उम्मीद बढ़ाता चला जाता है। यहाँ तक कि उस का वक्ते मुक़र्रर आ जाता है और वह इसी शैतानी रास्ते पर चलते हुए और ख़्वाहिशों को पूरा करते हुए इस नापाइदार दुनिया से उठ जाता है।(मुकाशफतुल कुलूब , बाब 16 , पेज 109)

शैतान की 2 बातें गुस्सा और मोहताजी

शैतान का एक रास्ता लोगों से उम्मीदें रखना है। हज़रते सुफ़वान बिन सुलैम फरमाते हैं कि शैतान जनाब अब्दुल्लाह बिन हन्ज़ला के

सामने आया और कहने लगा, मैं तुम को एक बात बताता हूं, इसे याद रखना। उन्हों ने कहा मुझे तेरी किसी नसीहत की ज़रूरत नहीं है। शैतान ने कहा तुम सुनो तो सही अगर अच्छी बात हो तो याद रखना वरना छोड़ देना। बात यह है कि अल्लाह तआला के सिवा किसी इन्सान से अपनी आरज़ूओं का सवाल न करना और यह देखना कि गुस्से में तुम्हारी क्या हालत होती है क्यों कि मैं गुस्से की हालत में ही इन्सान पर काबू पाता हूँ।(मुकाशफतुल कुलूब , बाब 16 , पेज 109)

जल्दबाज़ी शैतान का रास्ता है

शैतान का एक रास्ता साबित क़दमी की इन्सान में कमी और जल्द बाज़ी की तरफ उस का झुकाव है। फ़रमाने नबवी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) है, जल्द बाज़ी शैतानी काम है और सब्र व बुर्दबारी अल्लाह की देन है।

जल्दबाजी में इन्सान को शैतान ऐसे तरीके से बुराई पर माइल करता है कि इन्सान महसूस ही नही करता। रिवायत है कि जब हजरते ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश हुई तो शैतान के तमाम शागिर्द उस के यहां जमा हुए और कहने लगे, आज तमाम बुतों ने सर झुका लिए हैं, शैतान ने कहा मालूम होता है कि कोई बड़ा हादसा हो गया है। तुम यहीं ठहरो मैं मालूम करता हूँ, चुनान्चे उस ने पूरब व पच्छिम का चक्कर लगाया मगर कुछ भी पता न चला, यहाँ तक कि वह हजरते ईसा अलैहिस्सलाम की जाए विलादत पर पहुँचा और यह देख कर हैरान रह गया कि फरिश्ते हज़रते ईसा

अलैहिस्सलाम को घेरे हुए हैं। वह वापस अपने शागिर्दो के पास पहुँचा और कहने लगा कि कल की रात एक नबी की पैदाइश हुई है। मैं हर बच्चे की पैदाइश के वक्त मौजूद होता हूं मगर मुझे इन की पैदाइश का बिल्कुल इल्म नही हुआ। लिहाजा इस रात के बाद बुतों की इबादत (पूजा) खत्म हो जाएगी इस लिए अब इन्सान पर जल्दबाजी और लापरवाही के वक्त हम्ला करो (इन हथियारों से काम लो)।(मुकाशफतुल कुलूब , बाब 16, पेज 109)

जरुरत से ज्यादा सामान शैतान का है

एक रास्ता ज़र व जीमन का है क्यों कि जो चीज इन्सान की जरूरत से ज्यादा हो वह शैतान का ठिकाना बन जाती है। हज़रत साबितुल बनानी रदीअल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि जब अल्लाह तआला ने नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मबऊस फरमाया तो शैतान ने अपने शागिर्दों से कहा आज कोई बड़ा वाकिआ रौनुमा हुआ है, जाओ देखो तो क्या हाल है? वह सब तलाश में निकले मगर नाकाम लौट कर कहने लगे हमें तो कुछ भी मालूम न हो सका। शैतान ने कहा तुम ठहरो मैं अभी तुम्हे आकर बताता हूँ, शैतान ने वापस आकर बताया कि अल्लाह तआला ने (हजरत) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मबऊस फरमाया है। चुनान्चे शैतान ने अपने तमाम चेलों को सहाबए किराम (रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन) के पीछे लगाया कि उन लोगों को गुमराह करें। मगर वापस जाकर कहते उस्ताद! हम ने आज तक ऐसी नाकामी का मुँह नही देखा, जब यह नमाज शुरू करते हैं तो हमारा सब किया धरा खाक में मिल जाता है, तब शैतान ने कहा घबराओ नही अभी कुछ और इन्तेजार

करो जल्द ही उन पर दुनिया अरजों (सस्ती) और फ़ावों (ज्यादा) हो जाएगी और उस वक्त हमें अपनी उम्मीदें पूरी करने का ज्यादा मौका मिल जाएगा।

ख़र्च करने से रोकती है

एक रास्ता फक्र व फाक़ा का डर और बख़ीली है। क्यों कि यह चीज़ें इन्सान को अल्लाह के रास्ते में खर्च करने से रोकती हैं और उसे माल व दौलत जमा करने और दर्दनाक अज़ाब की दावत देती है। बुख़्ल का सब से बड़ा नुकसान यह होता है कि बख़ील माल व दौलत हासिल करने के लिए बाज़ारों के चक्कर लगाता रहता है जो कि शैतान की आमाज़गाहें (ठिकाने) है। (शैतान अपनी जगहों पर घात लगाये बैठा होता है।)(मुकाशफतुल कुलूब , बाब 16 , पेज 109)

वो तौबा नहीं करते

एक रास्ता मज़हब से नफरत, ख्वाहिशात की पैरवी अपने मुखालिफीन से बुग्ज़ व हसद और उन्हें हिकारत (गिरी नज़र) से देखना है और यह चीज़ चाहे आबिद हो या फासिक़ सब को हलाक कर देती है। हज़रते हसन रदीअल्लाहु अन्हु का इरशाद है कि शैतान ने कहा मैंने उम्मते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गुनाहों की भूल भुलैयों में भटकाया मगर उन्होंने इस्तिग़फार से मुझे शिकस्त दे दी। तब मैं उन्हें ऐसे गुनाहों की तरफ ले गया जिन के लिए वह कभी इस्तिगफार नही करते और वह उन की नाजाइज़ ख्वाहिशात है। (शैतान की इस बात में सच्चाई है क्योंकि आम तौर

पर लोग यह नही समझ सकते कि ख्वाहिशात ही अस्ल में गुनाहों की तरफ रागिब (खींचना) करती है लिहाजा वह अल्लाह से इस्तिगफार करे। (मुकाशफतुल कुलूब , बाब 16 , पेज 109)

वो खुद ही बद बातिन है

एक रास्ता मुसलमानों के बारे में बदगुमानी का है लिहाजा इस से और बद-बख्तों की तुहमतों से बचना चाहिए। अगर आप कभी किसी ऐसे इन्सान को देखें जो लोगों के ऐब ढूँडता है और बद गुमानियाँ फैलाता है तो समझ लीजिए कि वह शख्स खुद ही बद बातिन है और यह अमर उस की बद बातिनी के इज़हार का एक तरीका है लिहाजा हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह शैतान के दाख़िल होने के इन तमाम रास्तों को बन्द कर दे और अल्लाह तआला की याद से अपने दिल को एक महफूज़ किला बना ले। (मुकाशफतुल कुलूब , बाब 16 , पेज 109)

'इंसान के दिल मे पहुचने के लिए शैतान के 10 दरवाज़े :'

कुछ बुजुर्ग का कहना है मैने इस बात पर ग़ौर व फिक्र किया कि शैतान इंसान के दिल मे किन दरवाज़ों से आता है तो मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि इंसान तक आने के लिए शैतान 10 दरवाज़ों को इस्तेमाल करता है।

पहला दरवाज़ा: हिर्स (एक दूसरे से आगे बढ़ना) और बदगुमानी के रास्ते से आता है चुनांचे मैने इसका मुक़ाबला ज़ाते इलाही पर

भरोसे और क़नाअत (सब्र) के ज़रिये किया। मैंने सोचा कि कुरान की कौन सी आयात इसकी ताईद करती है तो मैंने इस आयत को पाया:

"और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नही जिसका रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मा ए करम पर न हो"

मैने इस तरह शैतान की कमर तोड़ दी।

दूसरा दरवाज़ा: मैंने देखा कि वो तवील ज़िन्दगी (गफलत) और लंबी उम्मीदों का दरवाज़ा इस्तेमाल करता है। मैंने उसका मुकाबला मौत के अचानक आ जाने से किया। मैंने कहा कि देखो कौन सी आयत इसकी ताईद करती है तो इस आयत को मैंने इसकी ताईद में पाया: 'और कोई जान नही जानती कि वो किस ज़मीन में मरेगी"

तीसरा दरवाज़ा: मैंने देखा कि शैतान दुनियावी सामान से आराम तलबी के दरवाज़े से आता है सो मैंने ज़वाले नेमत और बुरे हिसाब के ख़ौफ़ से मुक़ाबला किया जिसकी ताईद मुझे इस आयते मुक़द्दसा से मिली:

"जो दुनियाँ की ज़िन्दगी और उसकी आराइश चाहता है हम उसे दुनियाँ में पूरा फल देंगे और कुछ भी कमी न करेंगे लेकिन आखिरत में उनका कोई हिस्सा नहीं होगा और उनके लिये आग (जहन्नम) है और उनके आमाल जो वहाँ (दुनिया मे) करते थे सब अकारत (बर्बाद) गये"। (सुरह हूद, आयत न. 15-16)

सो मैंने जिस्म को आराम पहुंचाने वाले सामान से परहेज़ करके उस

दरवाज़े से आने से भी उसकी उम्मीदों का बांध तोड़ दिया।

'चौथा दरवाज़ा:' मैने ग़ौर किया तो इस नतीजे पर पहुंचा कि वो खुद पसंदी (खुद की तारीफ) का दरवाज़ा भी इस्तेमाल करता है सो मैंने एहसानाते इलाही और आख़िरत के ख़ौफ़ से उसका मुक़ाबला किया। इस आयत से इसकी ताईद मुझे मिली:

"तो उनमें से कोई बदबख्त है और कोई खुशनसीब"

मुझे नहीं मालूम कि मेरा शुमार किस गिरोह में हो सो उस तरह भी उसकी उम्मीद पाश-पाश हो गई।

'पांचवी दरवाजा': मैंने गौर व फिक्र किया तो देखा कि मुसलमान भाई को हकीर जानने और उनकी इज़्ज़त और एहतराम न करने के दरवाजे को भी व इस्तेमाल करता है सो मैंने मुसलमान भाइयों के हुकुकू और उनकी इज्जत व एतराम को अदा करके उसका मुकाबला करके उस दरवाजा को बंद कर दिया उसकी खुलासा मुझे उस फरमान ए इलाही से मिली " **हालांकि सारी इज़्ज़त तो सिर्फ अल्लाह के लिए उसके रसूल के लिए और ईमान वालों के लिए है"** (अल मुनाफिकून, आयत न. 8) उस तरह मैंने यह रास्ता भी उसका बंद कर दिया

छठा दरवाजा: मैंने ग़ौर और फिक्र किया तो देखा कि वह हसद का दरवाजा भी इस्तेमाल करता है मैंने उसका मुकाबला मखलूक़ के दरमियान अल्लाह त'आला की तक़सीम, अदल और इंसाफ से किया जिसकी ताईद मैंने उस आयत तैयबा से पाई "हमने उनमें

उनकी ज़िन्दगी का सामान दुनिया की ज़िन्दगी में बाँटा और उनमें एक दूसरे पर दर्जो बलन्दी दी"(सुरह: अल जुखरुफ़, आयत न. 32) मैंने उसके साथ शैतान की उम्मीदों को खत्म कर दिया,.

सातवां दरवाजा: मैंने ग़ौर और फिक्र किया तो इस नतीजे पर पहुंचा की रियाकारी और लोगों से तारीफ सुनने को भी वह अपना दरवाज़ा बनाए बैठा है सो मैंने इख़लास नियत से उसका मुकाबला किया मुझे कुरान पाक की यह आयत उसके ताईद में मिली " तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो तो उसे चाहिए कि नेक काम करें और अपने रब की बंदगी में किसी को शरीक ना करे " (सुरह: अल काफ, आयत न. 110)

आठवां दरवाजा: मैंने गौर और फ़िक्र किया तो इस नतीजे पर पहुंचा की बुख्ल और कंजूसी के दरवाजे से शैतान इंसान तक पहुंचता है मैंने उसका मुकाबला उस तरह किया की जो कुछ मखलूक के हाथ में है वह सब फना खत्म होने वाला है और जो कुछ ख़ालिक के कुदरत वाले हाथ में है वह हमेशा और बाकी रहने वाला है, मैंने अल्लाह के इस फरमान से इसकी ताईद पाई " जो तुम्हारे पास है हो चुकेगा (खत्म हो जाएगा)और जो अल्लाह के पास है हमेशा रहने वाला है"(सुरह: नहल, आयत न 96)

नवा दरवाजा : मैंने गौर और फिक्र क्या तो देखा शैतान ख्वाहिशात और लालच का दरवाज़ा इस्तेमाल करता है मैंने लोगों से मायूसी और अल्लाह ताला की जांच पर भरोसा के जरिए उसका मुकाबला किया और उसके ताईद में यह आयत पाई " और जो खुशनसीब है

डरता रहता है अल्लाह पाक से, बना दिया है अल्लाह उसके लिए जन्नत का रास्ता (सुरह: तलाक, आयत न. 2)।

दसवां रास्ता: मैंने गौर और फिक्र किया तो इस नतीजे पर पहुंचा कि शैतान तकब्बुर का दरवाज़ा इस्तेमाल करता है चुनांचे मैंने तवज्जो व इनकसारी से उसका मुकाबला किया और उस आयत से उसकी ताईद पाई "ऐ लोगों हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हें शाखें और क़बीले किया कि आपस में पहचान रखो बेशक अल्लाह के यहाँ तुम में ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह जो तुम में ज़्यादा परहेज़गार हैं बेशक अल्लाह जानने वाला ख़बरदार है" (सुरह: हुजरात, आयत न.13)(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन, जिल्द 2, 416)

दुनिया में शैतान की हक़ीक़त

पहले ये जान लें कि ये दुनिया मोमिन के लिए आराइश (राहत) की जगह नही बल्कि आज़माइश की जगह है। ये दुनिया जंगल की तरह है और इस दुनिया मे शैतान शेर की तरह है और इंसान भेड़िये की तरह है। जैसा कि कुरान पाक में है अल्लाह फरमाता है "ऐ इंसान ख़बरदार तुम्हें शैतान फ़ितने (मुसीबत) में न डाले जैसा तुम्हारे मां बाप को बहिश्त (जन्नत) से निकाला"। (सूरह आराफ, आयात न. 27)

फिर फ़रमाता है : उनसे (शैतान से) बचता रह कि कहीं तुझे लग़ज़िश (धोखा) न दे दें (सुरह माएदा, आयत न. 49)

शैतान बोला " मैं इंसानो को पीस डालूंगा मगर थोड़ा" ।(यानी सिर्फ

परहेज़गारों के अलावा सबका ईमान छीन कर अज़ाब का हकदार बना देगा) (सूरह बनी इस्राईल, आयत न. 62)

इंसान के बारे में अल्लाह फरमाता है : आदमी कमज़ोर बनाया गया। (सूरह निसा, आयत न. 28)

दुनिया क्या चाहती है?

हज़रते जैद बिन अरकम रदीअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हम हजरते अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु के मकान पर बैठे हुए थे, आप ने पानी मंगवाया तो पानी और शहद हाज़िर किया गया। आप जब उसे मुंह के करीब ले गये तो बे इख़्तियार रोने लगे, यहां तक कि पास बैठे हुए सब सहाबए किराम भी रोने लगे, कुछ देर बाद आपने फिर पीने का इरादा फ़रमाया मगर शहद और पानी देख कर दोबारा रोने लग गये यहां तक कि सहाबए किराम ने ख्याल किया कि शायद हम इस रोने की वजह दरियाफ्त नहीं कर सकेंगे। जब आपने अपने आंसू साफ़ किये तो सहाबए किराम ने अर्ज़ किया ऐ ख़लीफतुर्रसूल! आप के रोने का सबब क्या था? आपने फ़रमाया एक बार मुझे रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हमराही का शरफ नसीब हुआ, आप अपने जिस्मे मुबारक से किसी नज़र न आने वाली चीज़ को दूर फरमा रहे थे। मैंने अर्ज़ किया हुज़ूर! आप किस चीज़ को हटा रहे हैं? आपने फ़रमाया मेरे पास अभी दुनिया आई थी, मैं ने उसे कहा मुझ से दूर रहो, वह लौट गई है और यह कह गई है कि आप तो मुझ से बचे रहेंगे मगर आपके बाद वाले लोग नही बच सकेंगे। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31)

दुनिया शैतान की फौज़ है

जनाब सुफ़यान बिन ईलिनिया रदीअल्लाहु तूआला अन्हु का क़ौल है जब कोई जमाअत (जलसा/मिलाद में) ज़िक्रे खुदा के लिए जमा होती है तो शैतान और दुनिया अलाहिदा (अलग) हो जाते हैं, फिर शैतान दुनिया से कहता है क्या तूने नहीं देखा यह क्या कर रहे हैं? दुनिया कहती है उन्हें छोड़ दे जूहीं यह ज़िक्रे इलाही (मजमा) से फ़ारिग होंगे तो मैं उन्हें गर्दनों को पकड़ कर तेरे हवाले करदूँगी। (सुन्नी फज़ाइले आमाल, बाब ज़िक्रे इलाही)

सबक : दुनियादारी से बचो, दुनिया दीन से दूर करके शैतान के करीब ले जायेगी और शैतान जहन्नम में ले जायेगा।

दुनिया और शैतान

कुरआन में अल्लाह फरमाता है : हरगिज़ तुम्हें धोखा न दे दुनिया की ज़िन्दग़ी और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर फ़रेब न दे वह (शैतान) बड़ा फ़रेबी। (सुरह फ़ातिर ,आयत 5)

परेशानी की वजह : हक़ीक़त में देखा जाए तो इस दौर में दुनिया मुसलमानों को धोखा दे दी है और शैतान भी फरेब दे दिया है इसलिए मुसलमान परेशान है।

कुरआन में अल्लाह फरमाता है : यह दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद और बेशक आख़िरत का घर ज़रूर वही सच्ची ज़िन्दगी है क्या अच्छा था अगर जानते। (सुरह अंकबूत, आयत न.

64)

शैतान दुनिया के साथ है

हदीस : हज़रते इब्ने हब्स ने कहा: हजरते ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: बेशक शैतान दुनियां के साथ है, दौलत के साथ उसका मक्र, ख्वाहिशात के वक्त उसकी तेज़ी और शहवत (लालच) के वक्त उसकी कामयाबी है। (मकाइदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)

गौ़रो फिक्र : दौलत, ख्वाहिशात और लालच ही दुनिया है इसीलिए हमारे बुजुर्गाने दीन फ़क़ीराना ज़िन्दगी अपना कर इस दुनिया के खेल कूद से बच गए।

शैतान दुनिया का सरदार

हज़रते सईद बिन अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया कि हजरते ईसा बिन मरियम अलैहिमुस्सलाम ने इब्लीस की जानिब देखा और फरमाया: ये दुनियां का सरदार है, दुनियां की जानिब निकला और दुनियां ही मांगा, दुनियां की किसी चीज में मैं उसे शरीक नहीं करूंगा हत्ता की उस पत्थर में भी जिसे मैं अपने सर के नीचे रखता हूं और मैं जब तक दुनिया में रहूंगा कभी हंसूंगा नही । (मकाइदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)

दुनिया में राहत का सामान शैतान का है

रिवायत है कि हजरत ईसा अलैहिस्सलाम एक दिन पत्थर से टेक (आराम के गर्ज से) लगाये हुए थे। शैतान का वहाँ से गुज़र हुआ

उसने कहा ऐ ईसा (अलैहिस्सलाम) तुमने दुनिया को मरगूब (पसन्दीदा) समझा है? ईसा अलैहिस्सलाम ने उसे पकड़ लिया और उस की गुड़ी में मुक्का मार करके फरमाया, यह लेजा, यह तेरे लिए दुनिया है। (मुकाशफतुल कुलूब , बाब 16, पेज 109)

दुनिया शैतान का जाल है

हजरत साबित रदीअल्लाहु त'आला अन्हु ने फरमाया : जब नबीए पाक मबऊस (पैदा) हुए तो इब्लीस मलऊन ने अपने शैतानों को सहाबा के पास भेजना शुरू किया लेकिन वो इब्लीस के पास सादा कागज़ लेकर वापस आए उसने कहा क्या बात है तुम उन से कुछ फायदा ना हासिल कर सके उन्होंने कहा उनके जैसे अफराद के साथ कभी भी हमारा सामना ना हुआ इब्लीस ने कहा उनके पास ठहरे रहो हो सकता है कि दुनिया उन पर ज़ाहिर हो जाए, उस वक्त अपना काम पूरा कर सकोगे।(मकाइदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)

शैतान तीन बातों में फँसाएगा

हज़रते अबू उमामा बाहिली रदीअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मबऊस फरमाया गया तो शैतान अपने लश्कर के पास आया, उन्होंने शैतान से कहा एक नबी मबऊस हुआ है और उस के साथ उस की उम्मत (मुसलमान) भी है। शैतान ने पूछा क्या वह लोग दुनिया (दौलत, शोहरत और औरत) को पसन्द करते हैं? उन्होंने कहा हां, शैतान ने कहा कि फिर तो कोई परवाह नही, अगर वह बुतों को नही पूजते तो न पूजें,

हम उन्हें तीन बातों में फंसायेंगे।

1. दूसरे की चीज़ ले लेना (अमानत में खयानत, जैसे चोरी, जमीन या माल में कब्जा, नाप तौल में कमी, मजदूर का पैसा खा जाना, झूठ बोलकर तिज़ारत करना),

2. दुनियावी सामान पर पैसा खर्च करा कर (यानी शैतान के राह में पैसा ख़र्च करना)

3. लोगों के हुकूक़ अदा न करना, यही तीन चीजें तमाम बुराईयों की बुनियाद है। (मुकाशफतुल , बाब 31, पेज 201)

इमाम ग़ज़ाली की किताब मिन्हाजुल आबेदीन से

ऐ बरादरे अज़ीज़ ! इबादत में तरक्क़ी और कामयाबी हासिल करने के लिये शैतान से जंग और उस पर सख्ती करना भी लाज़िम और ज़रूरी है और येह दो वजह से ज़रूरी है :

(1) वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है और हर वक्त तुम्हें गुमराह करने के मन्सूबे बनाता रहता है उस से सुलह या रहम की उम्मीद हरगिज़ नहीं की जा सकती बल्कि वोह तुम्हें हलाक कर के ही दम लेगा, इस लिये ऐसे ख़तरनाक दुश्मन से बे ख़ौफ़ या ग़ाफिल रहना संगीन ग़लती है, तुम ज़रा मुन्दरिजए जैल आयाते कुरआनिय्या में तो गौर करो :

"ऐ औलादे आदम! मैं ने तुम से येह अहद नहीं लिया था कि दुन्या में जा कर शैताने लईन की इबादत न करना, क्यूंकि वोह तुम्हारा खुला

दुश्मन है"।

दूसरी आयत "बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तो तुम भी उस से दुश्मनी करो" ।

शैतान पर सख्ती करने की दूसरी वजह येह है कि उस का तुम से दुश्मनी करना उस की फ़ितरत में है वोह हमेशा तुम से मुहारबा में मशगूल है और चौबीस घन्टे अपनी शैतानियत के तीर फेंकता रहता है और तुम उस की शरारत और फ़ितना अन्दाजी से मुतलक़न गाफिल हो, इस ग़फ़्लत का जो अन्जाम होगा वोह ज़ाहिर है।

और शैतान को इन्सान की अदावत के खिलाफ़ जियादा भड़काने वाले चन्द मजीद अस्बाब येह हैं कि तुम खुदा तआला की इबादत में मसरूफ़ हो, और मख़्लूके खुदा को अपने क़ौलो फे'ल से दा'वते इस्लाम देने में लगे हुवे हो, और येह उमूर शैतान के पेश, उस की हिम्मत उस की मुराद और उस के मिशन के क़तअन ख़िलाफ़ और मुतज़ाद हैं, लिहाजा इस तरह तुम शैतान को ग़ज़बनाक करने, उस की शरारत, उस की अदावत और उस की मुखालफत को और ज़ियादा भड़काने में मसरूफ़ होते हो, जब तुम्हारा रवय्या उस के साथ येह है तो वोह भी बढ़ चढ़ कर तुम्हारी अदावत, तुम से जंग और तुम से मक्रो फ़रेब करने पर कमर बस्ता रहता है। यहां तक कि वोह तुम्हारे हाल को परागन्दा कर देता है बल्कि वोह येह कोशिश करता है कि वोह तुम्हारे ईमान ही का ख़ातिमा कर दे क्यूंकि वोह तुम से किसी वक्त भी बे ख़ौफ़ नहीं, शैतान तो उन के साथ भी अदावत करने से बाज़ नहीं आता जो उस के साथ अदावत और

मुखालफ़त नहीं करते, जैसे कुफ्फार, गुमराह और फ़ासिक व फ़ाजिर लोग। तो उन के साथ उस की अदावत का क्या हाल होगा जो हर वक्त उस की मुखालफ़त और इस को ग़ज़बनाक करने और गुमराह कुन मन्सूबों को ख़ाक में मिलाने में मसरूफ़ रहते हों ? तो ऐ इबादत और दा'वते हक़ में सरगर्मी का मुज़ाहरा करने वालो ! आम लोगों के साथ उस की अदावत उमूमी होगी मगर तुम से खुसूसी, इस लिये तुम्हारा मुआमला निहायत अहम है ।

फिर तुम्हारी अदावत व मुखालफत में इब्लीस सिर्फ अकेला नहीं बल्कि उस के हमराह शयातीन की मुनज़्ज़म जमाअत है। उस की जमाअत में तुम्हारा नफ्स और तुम्हारी ख्वाहिशात भी शामिल हैं जो तुम्हारी इन्तिहाई दुश्मन हैं और तुम पर गालिब आने के लिये उस के पास हज़ारों ऐसे अस्बाब हैं जिन से तुम यक्सर गाफिल हो ।

हज़रते यहया मुआज़ राज़ी ने बहुत ही खूब कहा है, आप फ़रमाते हैं: शैतान फ़ारिग है और तू मश्गूल है, वोह तुझे देखता है मगर तू उसे नहीं देखता, तू ने उसे भुलाया हुवा है मगर उस ने तुझे नहीं भुलाया और तेरे अन्दर भी शैतान के कई यारो मददगार हैं। इस लिये उस से मुहारबा और उस को मगलूब करना बहुत ज़रूरी है वरना तू उस की शरारतों और हलाकतों से महफूज़ नहीं रह सकता।

सुवाल : किस तरह इब्लीस से मुहारबा किया जाए और कौन सी चीज़ उस को ज़ेर और मग़लूब कर सकती है?

जवाब : अहले मुजाहदा व रियाज़त के हां इस के दो तरीक़े हैं : एक वोह है जो बा'ज़ मशाइख ने फ़रमाया है कि इब्लीस को दफ्फ़ करने

के लिये सिर्फ हक़ त'आला से पनाह ली जाए, इस लिये कि शैतान एक कुत्ता है जिस को हक़ तआला ने तुम पर मुसल्लत कर दिया है, अगर तुम उस से मुक़ाबला और उस को अपन से हटाने में मश्गुल हो गए तो तंग आ जाओगे और तुम्हारा बहुत सा कीमती वक़्त ज़ाएअ हो जाएगा और आखिर कार वोह ग़ालिब आ जाएगा और तुम्हें ज़ख्मी कर देगा और काट खाएगा, इस लिये कुत्ते के मालिक के पास ही पनाह लेनी बेहतर है, जो उसे तुझ से हटा दे।

दूसरा तरीका येह है कि उस से मुकाबला किया जाए, उस को हटाने और उस की मुखालफ़त के लिये हर वक्त कमर बस्ता रहा जाए। मैं (इमाम ग़ज़ाली कहता हूं कि मेरे नज़दीक ज़ियादा मुनासिब और बेहतर येह है कि दोनों तरीकों पर अमल किया जाए, अव्वल तो उसकी शरारतों से रब तआला से पनाह मांगी जाए, जैसा कि हम को हुक्म है और अल्लाह तआला उस की शरारतों से हमें महफूज़ रखने के लिये काफ़ी है। फिर अगर तुम येह महसूस करो कि शैतान हक़ तआला से पनाह मांगने के बा वुजूद तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ता और ग़ालिब आने की कोशिश करता है तो इस का मतलब यह है कि अल्लाह तआला को हमारे मुजाहदे, हमारी कुव्वत और हमारे सब्र का इम्तिहान मतलूब है या'नी हक़ तआला येह देखना चाहता है कि तुम शैतान से मुक़ाबला और मुहारबा करते हो या उस से मगलूब हो जाते हो जैसे कि उस ने हम पर कुफ्फ़ार वगैरा को मुसल्लत कर रखा है हालांकि वोह इस पर क़ादिर है कि हमारे जिहाद वगैरा केबिगैर ही उन की शरारतों और फ़ितनों को कुचल दे लेकिन वोह ऐसा नहीं करता बल्कि बन्दों को इन से जिहाद का हुक्म करता है

ताकि आज़माए कि किस के दिल में जज़्बए जिहाद और शहादत की तड़प है और कौन पूरे खुलूस, तन्दही और सब्र से इन का मुकाबला करता है अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में फ़रमाया:और ताकि अल्लाह तआला मुख्लिस ईमानदारों को ज़ाहिर कर दे और ताकि तुम में बा'ज़ को शहादत का रुत्बा अता फरमाए। एक मक़ाम पर यूं इरशाद फरमाया : क्या तुम ने येह गुमान कर लिया है कि तुम जन्नत में दाखिल हो जाओगे हालांकि अल्लाह तआला ने तुम में से अभी तक जाहिदीन और सब्र करने वालों को जिहाद के ज़रीए मुमताज़ और अलग नहीं किया। तो इसी तरह शैतान के मुक़ाबले में भी हमें चुस्ती और पूरी कोशिश का हुक्म दिया गया है फिर हमारे उलमाए किराम ने फ़रमाया है कि शैतान को मग़लूब करने और उस से मुक़ाबला करने के लिये तीन चीज़ों का होना ज़रूरी है :

पहली चीज़ येह है कि तुम उस के हीलों और चालाकियों को मा'लूम करो और पहचानो, जब तुम्हें उस की हीला साज़ियों का इल्म हो जाएगा तो फिर वोह तुम को नुक्सान नहीं पहुंचा सकेगा। जैसे चोर को जब मा' लूम हो जाए कि साहिबे मकान को मेरा इल्म हो गया है तो वोह भाग जाता है। दूसरी चीज़ येह है कि तुम शैतान की गुमराह कुन दा'वत को हरगिज़ मन्जूर न करो, और तुम्हारा दिल कतअन उस से मुतअस्सिर न हो, और तुम उस के मुक़ाबले की तरफ़ तवज्जोह न दो क्यूंकि इब्लीस एक भोकने वाले कुत्ते की मानिन्द है अगर तुम उस को छेड़ोगे तो ज़ियादा शोर मचाएगा और अगर ए राज़ करोगे तो वोह भी ख़ामोश हो जाएगा।

इब्लीस से हिफाज़त की तीसरी तदबीर येह है कि ज़िक्रे इलाही की

कसरत की जाए। सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम शफ़ीए मुअज़्ज़म नबिय्ये करीम ने फ़रमाया है : शैतान के लिये खुदा तआला का ज़िक्र इतना तकलीफ़ देह है जिस तरह इन्सान के लिये ख़ारिश

सुवाल : शैतान के मक्रो फ़रेब किस तरह मालूम हो सकते हैं? जवाब : शैतान के मक्रो फरेब कई तरह के हैं, अव्वल तो उस के वस्वसे हैं जो उस के तीर हैं जिन के ज़रीए वोह लोगों के कुलूब मजरूह करता है और उन वसाविस का सहीह इन्किशाफ़ ख़्वातिर और ख्वातिर की अक्साम मा 'लूम करने से हो सकता है

दूसरी चीज़ उस के हीले हैं जो ब मन्जिला जाल के हैं जिन से लोगों के दिलों को फांसता है और उन की मा' रिफ़त, शैतान के धोखे, उन के अवसाफ़ और उन के रास्ते मालूम करने से होती है, उलमाए किराम ने इन खवातिर व वसाविस की तफ़सील में कई बाब लिखे हैं और हम (इमाम गज़ाली) ने इस सिलसिले में एक मुस्तकिल किताब "तल्बीसे इब्लीस" नाम तस्नीफ़ की है और हमारी येह ज़ेरे तस्नीफ़ किताब इख़्तिर व ईजाज़ के बाइस इन ख़्वातिर व वसाविस वगैरा की तफ़सीलात की मुतहम्मिल नहीं हो सकती लेकिन हम हर एक चीज़ को इस किताब में ऐसे इख़्तिसार के साथ बयान करते हैं कि अगर इन पर अमल कर लिया जाए तो काफ़ी हो जाएं।

ऐ अज़ीज़ ! दिल में जो ख़तरात आते हैं इन की अस्ल येह है कि अल्लाह तआला ने हर इन्सान के दिल पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर किया हुवा है जो उसे नेकियों का इल्हाम करता है। इस फ़िरिश्ते को मुल्हिमकहते हैं और इस की दा 'वत को इल्हाम । इस के मुक़ाबले में

खुदा की तरफ से दिल पर एक शैतान मुसल्लत कर दिया गया है जो बुराई की तरफ बुलाता है, उस शैतान को वस्वास और उस की दा'वत को वस्वसा कहते हैं। मुल्हिम इन्सान को नेकियों की तरफ बुलाता है और वस्वास सिर्फ बुराइयों की तरफ़, येह अकसर उलमा की राए है लेकिन मेरे शैख़ ने फ़रमाया है कि शैतान बसा अवकात ब ज़ाहिर नेकी की दा'वत देता है मगर दर अस्ल यहां भी उस का मक्सद बुराई की तरफ़ लगाना होता है और वोह इस तरह कि बड़ी नेकी की बजाए छोटी की तरफ़ बुलाता है जिस से एक बड़े गुनाह करने का नुक्सान नेकी के सवाब से ज़ियादा हो जैसे उज्च वगैरा, तो खुदावन्दे त'आला की तरफ से इन्सान के दिल पर दो दाई मुकर्रर हैं। हर एक अपनी नोइय्यत की दा'वत में लगा हुवा है और इन्सान अपने दिल से दोनों की दा'वत को सुनता और महसूस करता है। रिवायात में आया है कि नबिय्ये करीम ने फ़रमाया : जिस किसी इन्सान के घर बच्चा पैदा होता है तो अल्लाह तआला उस के साथ एक फ़िरिश्ता लगा देता है और शैतान उस के साथ एक शैतान लगा देता है शैतान उस के दिल के बाएं कान में फूंकता रहता है और फ़िरिश्ता दाएं में, इस तरह दोनों अपनी अपनी दा'वत में लगे रहते हैं। और नबिय्ये करीम ने येह भी फ़रमाया है शैतान भी अपनी दावत के लिये इन्सान के पास आता है और फ़िरिश्ता भी ।

फिर एक शै और भी हक़ तआला ने इन्सान की तबीअत में रखी है जिस की वजह से वोह हर क़िस्म की शहवत और लज्ज़त की तरफ़ माइल हो जाता है, चाहे जाइज़ हो या नाजाइज़, इस तीसरी चीज़ का नाम ख़्वाहिशे नफ्स है जो इन्सान को आफ़ात में मुब्तला करती

है, तो येह तीन चीज़ें हैं जो इन्सान को मुख़्तलिफ़ उमूर की तरफ़ बुलाती हैं।

फिर इस मुक़द्दमे के बा'द जानना चाहिये कि ख़वाति़र वोह आसार हैं जो बन्दे के दिल में पैदा होते हैं और उसे किस काम के करने या न करने का हुक्म देते हैं, खतरे के मा'ना हैं : "इज़तिराब" चूंकि येह भी कभी दिल में आता है और कभी जाता है जिस तरह हवा कि कभी आती है और कभी जाती है तो इस आने जाने के इतराब के बाइस इस को ख़तरा कहते हैं।

हक़ीक़त में हर क़िस्म के ख़्वातिर का खालिक अल्लाह तआला ही है, अस्बाब व ज़राएअ की तरफ़ "मजाज़न" निस्बत होती है और ख़वातिर कुल चार किस्म हैं :

एक वोह जो इब्तिदाअन अल्लाह तआला की तरफ़ से इन्सान के क़ल्ब में पैदा होते हैं उन को सिर्फ खुतुवात कहते हैं ।

दूसरे वोह जो इन्सानी तबीअत के मुवाफ़िक कल्ब में पैदा होते हैं उन को हवाए नफ़्स कहते हैं।

तीसरे वोह जो मुल्हिम फ़िरिश्ते की दा'वत के जरीए हक़ तआला की जानिब से दिल में पैदा होते हैं, उन्हें इल्हाम के नाम से मौसूम करते हैं।

चौथे वोह जो शैतानी दा'वत से क़ल्बे इन्सानी में आते हैं उन्हें वस्वसा कहा जाता है और शैतान की तरफ़ मन्सूब करते हुवे उन्हें शैतानी ख़तरात भी कहते हैं, खुलासा येह कि ख़वातिर चार अक़्साम

हैं जिन का ज़िक्र हुवा।

इब्लीस के धोखे

जिन के ज़रीए बन्दे को ता'अत व इबादत से रोकने की कोशिश करता है, वोह सात किस्म के है :

अव्वल इबादत और ताअत से रोकने की कोशिश करता है तो अगर अल्लाह तआला बन्दे को बचा ले और बन्दा उस के मुतालबे को इस तरह रद्द कर दे कि "मुझे ताआत व इबादात की सख़्त ज़रूरत है क्यूंकि येह सफरे आखिरत का तौशा हैं और बग़ैर तौशा सफर तय नहीं हो सकता"।

दूसरा धोखा : तो फिर इब्लीस इस तरह गुमराह करता है और दिल मे वसवसा डालता है कि चलो आज रहने दो, येह काम कल कर लेना। अगर बन्दा इस से भी बच जाए और इब्लीस की बात को इस तरह ठुकरा दे कि मेरी मौत मेरे क़ब्ज़े में नहीं है और दूसरे येह कि अगर आज का काम कल पर छोड़ा तो कल का काम भी तो है वोह किस दिन करूंगा ? क्यूंकि कल का काम अलाहिदा है। जब इब्लीस यहां भी ना उम्मीद होता है तो

तीसरी धोखा : इब्लीस कहता है कि जल्दी जल्दी करो ताकि फुलां फुलां इबादत ज़्यादा करने के लिये फारिग़ हो सको। इस वसवसे का रद्द करते हुए बन्दा को जवाब देना चाहिए कि क़लील(कम) नेकी इत्मिनान व सुकन (इख़लास) के साथ उस नेकी से बेहतर है जो मिक़दार में ज़्यादा मगर नाक़िस हो ।

चौथा धोखा : रिया (दिखाया) में मुब्तला करने की कोशिश करता है, अगर इस वक्त भी बन्दा अल्लाह त'आला की इमदाद व हिफाज़त से बच जाए और येह कह कर वस्वसए रिया को रदद् कर दे कि "मैं किसी और की नुमाइश के लिये इबादत क्यूं करूं ? क्या सिर्फ खुदा तआला का देखना मेरे वासिते काफी नहीं है? तो फिर

पांचवा धोखा : उज्ब (खुदपसन्दी) में मुब्तला करने की कोशिश करता है, और बन्दे को अज़ रूए वस्वसा कहता है कि "तू कितना इज़्ज़त वाला और शब बेदार(रात को जाग कर इबादत करने वाला) है और तू कितनी फज़ीलत का मालिक है , इल्म और अमल वाला" अगर हक़ तआला के फ़ज़्लो करम से बन्दा अब भी महफूज़ रहे और खुदपसन्दी में मुब्तला न हो बल्कि इब्लीस के इस वस्वसे को इस तरह रद्द कर दे कि "इस में मेरी क्या बुजुर्गी है येह तो सब अल्लाह तआला का एहसान है जिस ने मुझ गुनहगार को येह तौफीक़ दी और यह भी उस का करम है कि मेरे हकीर व नाक़िस आ' माल को शरफ़े क़बूलिय्यत से नवाज़ा। अगर उस का फज़्लो करम न होता तो मेरे बेहद गुनाहों के मुक़ाबले में मेरे इन क़लील आ'माल की क्या वक्अत थी ?"

अगर इब्लीस के येह वार नाकाम हो जाएं तो फिर एक

छटे रास्ते से आता है और येह सब से ज़्यादा खतरनाक है, बहुत ही दाना और होशयार शख्स के सिवा कोई इस के धोखे से महफूज़ नहीं रह सकता और न ही इस से वाकिफ़ हो सकता है, चुनान्चे, इब्लीस येह कहता है कि "ऐ नेक बन्दे ! तू लोगों से पोशीदा पोशीदा

नेक आ'माल में कोशिश करता है, अल्लाह त'आला खुद ब खुद तेरे आ'माले ख़ैर को लोगों में मशहूर कर देगा।"

येह कहने से उस का मक़सूद रिया में मुब्तला करना होता है अगर अल्लाह तआला की इनायत से बन्दा इब्लीस के इस धोखे से भी बच जाए और उस के इस वस्वसे को इस तरह नाकाम बना दे कि "मैं इस चीज़ का ख्वाहिशमंद नहीं हूं कि मेरी नेकियां अवाम में मशहूर हों बल्कि जो अल्लाह तआला की रज़ा है वोही दुरुस्त और हक़ है, चाहे ज़ाहिर करे चाहे ज़ाहिर न करे, वोह मुझे कोई मर्तबा अता करे या न करे सब उस की मरज़ी है। लोगों के सामने इज़हार या अदमे इज़हार मेरे नज़दीक बराबर है क्यूंकि लोगों के हाथ में मेरा नफ्अ नुक्सान नहीं है।"

इस तरह गुमराह करने से मायूस होने के बाद इब्लीस यूं गुमराह करता है कि "इन्सान के नेक व बद होने के मुतअल्लिक़ रोजे़ अज़ल में फैसला हो चुका है, जो उस रोज़ बुरों में हो गया वोह बुरा ही रहेगा और जो अच्छों में हो गया वोह अच्छा ही रहेगा तुम्हारे आ' माल नेक व बद से फ़ैसलए अज़ली में हरगिज़ फर्क नहीं आ सकता !"

अगर अल्लाह तआला बन्दे को इस वस्वसए शैतानी से भी बचा ले और बन्दा इब्लीसे लईन को यूं जवाब दे कि मैं तो खुदा तआला का बन्दा हूं और बन्दे का काम है अपने मौला के हुक्म की ता'मील और अल्लाह तआला चूंकि रब्बुल आलमीन है इस लिये जो चाहे हुक्म दे और जो चाहे करे और फिर इबादत व ता'अत किसी तरह भी नुकसान देह नहीं क्यूंकि अगर मैं इल्मे इलाही में सआदत मंद हूं तो

फिर भी और ज़ियादा सवाब का मोहताज हूं और अगर इल्मे इलाही में मेरा नाम बद बख़्तों में लिखा हो तो भी नेक आ'माल करने से अपने ऊपर येह मलामत तो नहीं करूंगा। कि मुझे अल्लाह तआला ताअत व इवादत न करने पर सज़ा देगा और कम अज़ कम येह तो है कि नाफरमान बन कर जहन्नम जाने की निस्बत इताअत (फरमाबरदारी) करने वाला बन कर जाना बेहतर है लेकिन यह तो सब महज़ शको शुबा की बातें हैं वरना उस का वादा हक़ है और उसका कलाम क़त्अन सच्चा है और अल्लाह तआला ने तो जा बजा ता'आत व इबादात की बजा आवरी पर सवाबे जमील (बेहतरीन अज़्र) के वादे फ़रमाए हैं, तो जो शख़्स ईमान व ताअत के साथ रब त'आला के दरबार में हाज़िर होगा, वोह हरगिज़ दोजख में न जाएगा बल्कि खुदा त'आला की मेहरबानी और आ'माले सालिहा की वजह से जन्नते फ़िरदौस में जगह पाएगा लेकिन हक़ीक़त में येह दुखूल भी वा'दए खुदावन्दी की वजह से होगा। इसी सिदक़े वादा का इज़हार करने के लिये अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में सईद लोगों के इस कौल (फ़रमान) को नक्ल फ़रमाया है: "सब तारीफे हक़ त'आला के लिये हैं जिस ने हम से अपना वादा पूरा कर दिया"।

लिहाज़ा खुदा तुम पर रहम करे, तुम्हें इब्लीस के हीलों से बचने में होशयार और चोकन्ना रहना चाहिये क्यूंकि मुआमले की ही नज़ाकत तुम्हारे सामने है और इसी पर अपने बाक़ी अहवाल व अफ्आल को भी अंदाज़ा कर लो और हर वक़्त अल्लाह तआला से मदद तलब करते रहो और उस की पनाह में रहो क्यूंकि हर मुआमला उस के

हाथ में है और तौफीक़ अता करने वाला भी वही है। (मिन्हाजुल आबेदीन, बाब 3, स. 135)

शैतान अभी ज़िंदा है

शैतान जब किसी बन्दे में अपनी अदावत और मुखालफत की तसदीक कर लेता है और बन्दे की सच्चाई उस पर जाहिर हो जाती है तो वह उससे मायूस हो कर उसको छोड़ देता है और दूसरे की तरफ मुतवज्जेह होता है लेकिन पोशीदा तौर पर छिपता छिपता आता रहता है लिहाजा बन्दे को चाहिए कि सिदक पर सख्ती से काएम और शैतान के वार से होशियार रहे इसलिए कि उसका सुराख बारीक है और उसकी दुश्मनी पुरानी और हकीकी है, वह गोश्त पोस्त में खून की तरह रवां दवां रहता है। हज़रत अबू हुरैरा के बारे में रिवायत है कि वह किर सिनी में दुआ मांगा में करते थे कि इलाही मैं तेरी पनाह मांगता हूं उससे कि मैं जिना करूं या किसी को कत्ल करू किसी ने उनसे पूछा किया कि आप को यह ख़ौफ़ क्या है? आप ने फरमाया क्यों न ख़ौफ करूं जबकि शैतान जिन्दा है।(गुनियतुत्तालिबीन)

इब्लीस का बुढ़ापा और उसकी जवानी

इब्ने शाहीन ग़राइबुस् सुनन में हज़रते इब्ने अब्बास रदीअल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत करते हैं वो फ़रमाते हैं कि जब एक ज़माना गुज़र जाता है तो इब्लीस बूढ़ा हो जाता है फिर यह दोबारा 30 बरस की उम्र में वापस आ जाता है। (जिन्नों की दुनिया, .187)

दौलत से बचो शैतान से बच जाओगे

हिकायत : एक आबिद जो कि काफी वक्त से इबादते इलाही में मशगूल था, लोगों ने कहा यहाँ एक क़ौम है, जो एक दरख़्त की परस्तिश करती है, आबिद सुन कर गज़ब में आया और उस दरख़्त के काटने के लिए तैयार हो गया, उसको शैतान एक शैख़ की सूरत में मिला और पूछा कि कहाँ जाता है आबिद ने कहा कि मैं उस दरख़्त के काटने को जाता हूँ जिस की लोग परिस्तिश करते हैं वह कहने लगा कि तू फकीर आदमी है, तुम्हें ऐसी क्या ज़रूरत पेश आ गई कि तुम ने अपनी इबादत और ज़िक्र को छोड़ा और उस काम में लग पड़ा, आबिद बोला यह भी मेरी इबादत है, शैतान ने कहा मैं तुझे हरगिज़ दरख़्त न काटने दूँगा, इस पर दोनों में लड़ाई शुरू हो गई आबिद ने शैतान को नीचे डाल लिया और सीने पर बैठ गया शैतान ने कहा कि मुझे छोड़ दे मैं तेरे साथ एक बात करना चाहता हूँ वह हट गया, तो शैतान ने कहा अल्लाह तआला ने तुम पर इस दरख़्त को काटना फ़र्ज़ नहीं किया, और तू खुद इस की पूजा नहीं करता, फिर तुझे क्या ज़रूरत है कि इस में दखल देता है, क्या तू नबी है, या तुझे खुदा ने हुक्म दिया है अगर इस दरख़्त को काटना मन्जूर है तो अपने किसी नबी को हुक्म भेज कर कटवा देगा, आबिद ने कहा, मैं ज़रूर काटूंगा, फिर उन दोनों में जंग शुरू हो गई, आबिद उस पर ग़ालिब आ गया, उसको गिराकर उस के सीने पर बैठ गया, शैतान आजिज आ गया, उसने एक और तदबीर सोची और कहा कि मैं एक ऐसी बात बताता हूँ जो मेरे और तेरे दरमियान फैसला करने वाली हो, और वह तेरे लिए बहुत बेहतर और नाफेअ है, आबिद ने कहा वह क्या है? उसने कहा मुझे छोड़ दे तो मैं तुझे बताऊँ उसने छोड़ दिया तो शैतान कहा कि तू एक फकीर आदमी है तेरे पास कोई शै नहीं लोग तेरे नान नफका यानी लोगो का ताअना का ख़्याल रखते हैं, क्या तू नहीं चाहता कि तेरे **पास माल** हो और उससे अपने घर वालों की ख़बर रखे और खुद भी लोगों से बे परवाह होकर ज़िंदगी बसर करे, उसने कहा हाँ! यह बात तो दिल चाहता है तो शैतान ने

कहा कि उस दरख़्त के काटने के इरादे से बाज़ आजा मैं हर रोज़ हर रात को तेरे सर के पास दो दीनार रख दिया करूँगा, सवेरे उठ के ले लिया कर अपने अहल-व-अयाल पर खर्च किया कर तेरे लिए यह काम बहुत मुफीद और मुसलमानों के लिए बहुत नाफेअ होगा, और यह दरख़्त काटेगा उस की जगह और दरख़्त लगा लेंगे तो इस में क्या फाएदा होगा, आबिद थोड़ा फिक्रमंद हुआ और कहा कि शैख़ सच कहा, मैं कोई नबी नहीं हूँ कि उस का काटना मुझ पर लाज़िम हो और मुझे हक सुब्हानहु तआला ने उसके काटने का अम्र फरमाया हो कि मैं न काटने से गुनाहगार होंगा और जिस बात का इस शैख़ ने ज़िक्र किया है वह बेशक मुफीद है, यह सोच कर आबिद ने मन्जूर कर लिया और पुरा अहद कर के वापस आ गया रात को सोया सुबह को उठा तो दीनार अपने सरहाने पाकर बहुत खुश हुआ, इसी तरह दूसरे दिन भी दो दीनार मिल गए. फिर तीसरे दीन कुछ न मिला तो आबिद को गुस्सा आया और फिर दरख़्त काटने के इरादे से उठ खड़ा हुआ और शैतान उसी सूरत में सामने आ गया और कहने लगा कि अब कहाँ का इरादा है आबिद ने कहा कि दरख़्त को काटूंगा उसने कहा कि मैं हरगिज़ नहीं जाने दूँगा, उसी तकरार में फिर दोनों में कुश्ती हुई शैतान ने आबिद को गिरालिया, और सीने पर बैठ गया और कहने लगा कि अगर इस इरादे से बाज़ आजाए तो बेहतर, वर्ना तुझे ज़िबह कर डालूँगा, आबिद कहने लगा कि इसकी वजह बताओ कि कल तो मैंने तुम को पछाड़ लिया था, आज तू ग़ालिब आ गया है, क्या वजह है, शैतान बोला कि कल तू ख़ालिस खुदा के लिए दरख्त काटने निकला था, तेरी नियत में आज तेरा इरादा महज़ खुदा के लिए नहीं,बल्कि दौलत नजीं मिलने के वजह से है इस लिए मैं आज तुझ पर गालिब आइगया। (शैतान की हिकायत, पेज 83)

सबक: शैतान माल का लालच दे कर ईमान छीनता है। लिहाजा माल और दौलत शैतान का जाल है।